समाज विकास

मूल्य : १० रुपये प्रति, वार्षिक : १०० रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

कौस्तुभ जयंती वर्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
75
ALL INDIA MARWARI FEDERATION
PLATINUM JUBILEE YEAR
1935-2010

▸ जून २०१० ▸ वर्ष ६० ▸ अंक ०६

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन
व सीकर नागरिक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में

शिक्षा महाकोष की स्थापना हो – रूँगटा

१०वीं व १२वीं की परीक्षा में बेहतर अंक पानेवाले छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया गया।

स्थायी समिति की बैठक :

स्थायी समिति के सदस्यों की षष्ठम बैठक

संगोष्ठी :

आडम्बर और दिखावा – समाज के लिए अभिशाप

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦जून २०१० ✦वर्ष ६० ✦अंक ६ ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
वर्षिक सभा की सूचना	६
अध्यक्षीय – श्री नन्दलाल रूंगटा	७
अपनी बात – शम्भु चौधरी	८
जंतर–मंतर : अमेरिका की डायरी – सीताराम शर्मा	९
समाज सेवा–दशा और दिशा – रामअवतार पोद्दार	१०
भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार	११
सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार	११
संगोष्ठी: आडम्बर और दिखावा–समाज के लिए	१२
स्थायी समिति के सदस्यों की षष्ठम बैठक	१४
महामंत्री की रिपोर्ट	१६
हमारी नदियां गन्दे नाले बन रही है – त्रिलोकी दास खण्डेलवाल	१९
कविता – परशुराम तोदी 'पारस'	२१
ग़ज़ल – सत्यनारायण बीजावत	२१
हमारा सार्वजनिक जीवन–स्व. भंवरलाल सिंघी	२३
मारवाड़ी समाज अपनी चिन्तनधारा बदले – स्व. ईश्वरदास जालान	२५
समीक्षा : कैकेयी के चरित्र के साथ न्याय की कोशिश	२७
शिक्षा महाकोष की स्थापना हो – रुँगटा	२९
कविता : मैं मैं हूँ – विजया शर्मा	३०
ग़ज़ल – नरेश हमिलपुरकर	३१
राजस्थान परिषद ने मनाया ४७१वां प्रताप जयन्ती समारोह	३१
'शिक्षा गौरव' सम्मान से सम्मानित हुए मेधावी छात्र	३२
महाराजा अग्रसेन भवन का उद्घाटन समारोह संपन्न	३२
पार्षदों का अभिनन्दन	३३
मुख्यमंत्री तरुण गोगोई अपने शब्दों को वापस लें	३३
श्रद्धांजलि : भजन सम्राट राजेंद्र जैन नहीं रहे	३४

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है :

सुन्दर अंक के लिए बधाई!

समाज विकास का मार्च १० अंक देखा, अच्छा लगा। महाप्रज्ञ ससाक्षात्कार, आखिर क्या है? समाज सेवा, आधुनिक बैंकिंग–मारवाड़ी समाज की देन और क्या हो विवाह की आयु लेख अच्छे बन पड़े हैं। आपकी पत्रिका समाज के क्रिया कलापों तक सीमित न होकर एक बहुआयामी पत्रिका बनती जा रही है। राजस्थानी रचनाओं का अभाव खटकता है। राजस्थानी लेखकों से सम्पर्क किया जा सकता है। अच्छी रचनाओं के लिए पारिश्रमिक की व्यवस्था भी की जा सकती है। इतने सुंदर अंक के लिए बधाई।

लोहिया के विचारों से प्ररेणा ले समाज

समाज विकास (अप्रैल १०) अंक में रुँगटाजी का लेख लोहिया के विचारों से प्ररेणा ले समाज! वास्तव में विचार एवं प्ररेणादायी है। आपने ठीक ही कहा है कि हमें गर्व है कि लोहिया मारवाड़ी थे, पर इनसे प्रेरणा ले हमें भी राजनीति में सक्रियता निभानी है–यह शब्द आंखें खोल देने वाले हैं। अनेक लोग मारवाड़ियों की आर्थिक मदद से एम.पी. एम.एल.ए. बनते आये हैं और बन रहे है। मारवाड़ी समाज राजनीति को लफड़ा बता कर उससे दूर होते जा रहे हैं। यदि समाज का हित चिन्तन करके समाज में आदर्श स्थापित करना है तो क्यों नहीं हम राजनीति में खुले आकर समाज का हित करें। वैसे भी समाज पर हम लाखों खर्च करते हैं फिर क्यों नहीं मारवाड़ी समाज सक्रिय भागीदार बन कर समाज का कल्याण करते। ''थे के काम करो हो'', यह प्रश्न भूलकर ''थे भी यो काम करो'' का नारा लगाना ही समाज के लिए हितकर है।

– नागराज शर्मा
बिनजारो प्रकाशन, पिलानी, राजस्थान

मारवाड़ी समाज की लोकप्रियक पत्रिका

आपने जानकारी के लिए यो पत्र आपके पास भेज रह्यो हो। मारवाड़ी समाज की लोक प्रियक पत्रिका को प्रकाशन पुनः संचालन कर दियो गह्यो है सो आप से नम्रनिवेदन है की समाज को कोई श्री समाचार धार्मिक, सामाजिक, लेख, चुटकुला या आपको विचार म्हारी कार्यालय न समय पर भेजन को कष्ट करोगा। जिसस म्हे समय पर उसको प्रकाशन कर सका। या पत्रिका समाज की मारवाड़ी भाषा में नेपाल से प्रकाशित करी जावह साथ साथ आपस हर्दिक अनुरोध है की संघ संस्था या व्यक्ति इसको सदस्य बननो चाहव है तो कृपा म्हारे कार्यलय ने जानकारी कराने को कष्ट करोगा जिससे इसके संचालन में आर्थिक सहयोग प्राप्त होतो रहवे।

मारवाड़ी मंच सप्ताहिक
महावीर, रोड, बीरगंज–7, नेपाल

सूचना

हमें खेद के साथ सूचना देनी पड़ रही है कि वर्ष 2007 अप्रैल से मार्च 2008 के पूर्व का जिन विशिष्ट सदस्यों का वार्षिक शुक्ल बकाया चला आ रहा है उन सदस्यों के नाम सदस्या सूची से हटाया जा रहा है अतः सभी सदस्यों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अति शीघ्र करा लेवें।

नोट :
समाज विकास के प्रत्येक अंक में सदस्यों के नाम के साथ जहां तक का शुक्ल सम्मेलन को प्राप्त हुआ है वह लिखा रहता है। – राष्ट्रीय महामंत्री

चिट्ठी आई है :

विश्वम्भरजी नेवर तथा रतनजी शाह बोल्या सम्पादक सुयोग्य राखो

हिन्दुस्थान क्लब री राष्ट्रीय कार्यकारिणी री बैठक में विश्वम्भरजी नेवर तथा रतनजी शाह बोल्या **''सम्पादक सुयोग्य राखो वेतन भोगी। यूं ही कार्यालय रा कर्मचारी भी दूसरा राखो दक्ष।''**

किन्तु आजकाल सम्पादक १५००० और कर्मचारी १०००० रु० मासिक बिना मिलै कोनी। इण अर्थाभाव में भी पूज्य श्री नन्द किशोर जी जालान, समाज विकास नै ६०–७० वर्ष चलायो। ओ साहस, न तो विश्वम्भर जी में हैं तथा ना ही रतनजी शाह में। हाँ, विश्वम्भरजी नेवर, व्यक्तिगत छापो 'छपते–छपते' तथा ताजा टी.वी. चोखा चलावै है किन्तु आ योग्यता, समाज–विकास चलाणै में सफल नहीं हो सकै कारण संस्था में, डिक्टेटरशिप चालै कोनी। डिक्टेटरशिप में रतनजी शाह भी, नेवरजी ज्यूँ ही लाडेसर (पखवाड़ियो) चोखो चलायो थो। पछै दूजी संस्थावां में रहकर, चला कोनी सक्या। संस्था रै तथा व्यक्ति रै सफल होवणै में रात–दिन रो अन्तर रैवै।

राम गोपाल जी बागला बोल्या ''समाज–विकास रो कागज अर छपाई ठीक कोनी।'' अम्बु शर्मा रै विचार में दोनूं ही उत्तमोत्तम है। नेवर जी बोल्या विषय वस्तु रै चयन को स्तर घटिया है जिणरो समर्थन रतनजी शाह भी कर्यो। अम्बु शर्मा रो मत है कै घटिया कोनी किन्तु इतणा कमती पृष्ठ री पत्रिका में विषय चयन रो अवकाश ही कोनी। जिण हेतु रतनजी शाह ठीक बोल्या 'पृष्ठ संख्या बढ़ावो'। सो यदि पृष्ठ संख्या ३४ अथवा ४२ अथवा ५० रै स्थान पर ६६ अथवा ८२ अथवा ९८ कर दी जावै अर सभी रचनावां पर चोखो 'पत्रं, पुष्पं' दियो जावै तो विषय स्तर में समाज विकास री बरोबरी करणियो, दूजो पत्र ही नहीं ल्हादैगो सो तीन प्रस्ताव आया :

(१) सम्पादक वेतनभोगी राखणो।

(२) कार्यालय में क्लर्क, महंगा राखणां।

(३) पत्रिका रा पृष्ठ, दुगुणा करणा।

जणां तो एक–दो मोटरकार भी, कार्यालय रै नीचै ही खड़ी रैवणी चाईजै, कर्मचारियां री संख्या भी तीन गुणी करणी चाईजै। जिया नेवरजी कनै १०० कर्मचारी है। प्रेस भी निजी लगाणी चाइजै।

हाँ, मात्र आलोचना करणौ री टेम है, इण हेतु कै सम्मेलन रा वर्तमान काम करणियाँ पदाधिकारियां ने नीचो दिखावां।

– अम्बु शर्मा, सम्पादक
'नैणसी', राज. मासिक
205, S.K. Deo Road
Sri-Bhoomi, Kolkata-48

प्रचारक चाहिए

सम्मेलन में कार्य करने के लिए प्रचारक की जरूरत है। इच्छुक व्यक्ति अपना आवेदन पत्र महामंत्री के नाम से भेज सकते हैं। – व्यवस्थापक

Telegram : APKASAMAJ ESTD. 1935 Phone : (033) 2268-0319
Fax : (033) 2225-1866, 2242-9813

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION

(Regd. under W.B. Societies Act XXVI of 1961)
152-B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007

अध्यक्ष	महामंत्री	संयुक्त महामंत्री	संयुक्त महामंत्री	कोषाध्यक्ष
नन्दलाल रुंगटा	रामअवतार पोद्दार	ओम प्रकाश पोद्दार	संजय हरलालका	आत्माराम सोंथलिया

उपाध्यक्ष : हरिप्रसाद कानोड़िया, राज के. पुरोहित, गणेश प्रसाद कंदोई, राम बिलास साबू, ओम प्रकाश खण्डेलवाल, बद्रीप्रसाद भीमसरिया

सूचना

दिनांक : २९ जून २०१०

सभी सदस्यों की सेवा में

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वार्षिक साधारण सभा आगामी शनिवार ३१ जुलाई २०१० को दोपहर ३. ३० बजे मर्चेण्ट चेम्बर ऑफ कामर्स हॉल, १५ बी, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कोलकाता में निम्नलिखित विषयों पर विचारार्थ आयोजित की गई है।

सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुंगटा सभा की अध्यक्षता करेंगे।

आपकी उपस्थिति प्रार्थित है।

भवदीय

रामअवतार पोद्दार
राष्ट्रीय महामंत्री

संलग्न :

१. वित्तीय वर्ष २००९ – १० का आय – व्यय का लेखा – जोखा, लेखा परीक्षक द्वारा पारित किया हुआ।

विचारार्थ विषय :

१. गत बैठक की कार्यवाही स्वीकृत करना।
२. गत वर्ष के किया – कलाप का महामंत्री द्वारा प्रतिवेदन।
३. २००९ – १० के आय – व्यय का लेखा तथा संतुलन पत्र को स्वीकृत करना।
४. लेखा परीक्षक की नियुक्ति।
५. विविध अध्यक्ष की अनुमति से।

सम्मेलन भवन : २५, राजा राममोहन राय सरणी (अमहर्स्ट स्ट्रीट), कोलकाता - ७०० ००९, दूरभाष : (०३३) २३५०-९९२९

अध्यक्षीय :

माँस-मदिरापान का बढ़ता प्रचलन

श्री नन्दलाल रूंगटा, राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

जैसे–जैसे समाज की जरूरतें बदलती हैं, सामाजिक ढाँचे में भी बदलाव आता जाता है। मारवाड़ी समाज एक समय, विदेश भ्रमण अथवा विदेशों में रहकर शिक्षा ग्रहण करना एक प्रकार से सामाजिक अपराध मानता था। समाज में सनातनी विचार धारा को मानने वालों की सोच थी, कि इससे समाज में मांसाहारी प्रवृति का विकास होगा जो समाज के शाकाहारी जीवन में घुलकर समाज के ताने–बाने से छेड़छाड़ करेगा।

यह सोच उस समय की थी जब स्व. काली प्रसाद खेतान उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश जा रहे थे। नतीजा सामने था समाज के लोगों ने लामबन्द होकर उनको जाति बहिष्कार कर दिया।

परन्तु आज समाज के युवक एवं युवतियों में धड़ल्ले से माँस–मदिरापान का प्रचलन बढ़ते जा रहा है न तो हम इस पर कोई प्रतिबन्ध लगा पा रहें हैं, और ना ही इस दिशा में कुछ कर पा रहे हैं।

हमें याद आता है कि जब दादा–दादी, नाना–नानी को घर में प्याज की गंन्ध सूंघ लेते तो, खाना तक नहीं खाते। धीरे–धीरे मारवाड़ी समाज में प्याज का प्रचलन बढ़ता गया, अब बिना प्याज का खाना बोलकर बनवाया जाता है अर्थात प्याज हमारे घरों में आम बात हो गयी। इसी प्रकार लहसून भी धीरे–धीरे हमारे समाज का खाद्य पदार्थ बनते जा रहा है। परन्तु समाज की शुद्ध शाकाहारी व्यवस्था आज भी बरकरार है। धीरे–धीरे दुनियाँ के कई विकसित देश–मारवाड़ी समाज के इस गुण का रहस्य जानने का प्रयास कर रहे हैं और हमारा समाज मांसाहारी बनते जा रहा है तथा मदिरा का प्रचलन इतना अधिक तथा सार्वजनिक हो गया है कि शादी–विवाह समारोह में भी मदिरा पान होने लगा है। समाज के लोगों को सोचना होगा कि हम आडम्बर, फिजूलखर्ची के साथ मदिरा पान को किस तरह रोक पाने में सक्षम हो सकते हैं।

मदिरा पान हमारे संस्कृति में नहीं है तथा यह कोई उपयोगी पेय भी नहीं है इसके सेवन से मस्तिष्क के अलावा स्वास्थ पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परिवार की शान्ति तो भंग होती हीं है। साथ हीं यह विलासिता का परिचायक भी है।

मदिरा पान हमारे संस्कृति में नहीं है तथा यह कोई उपयोगी पेय भी नही है इसके सेवन से मस्तिष्क के अलावा स्वास्थ पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। परिवार की शान्ति तो भंग होती ही है। साथ ही यह विलासिता का परिचायक भी है।

आज समाज शिक्षित हुआ है। शिक्षित समाज का सपना हम देख भी रहे हैं, परन्तु साथ ही हमें यह देखना होगा कि इस शिक्षा से समाज में व्याप्त कुरीतियों को न सिर्फ समाप्त किया जा सके, इसके साथ–साथ हम हमारी सामाजिक धरोहर जैसे शाकाहारी, धार्मिक सामाजिक प्रवृति में किस तरह विकास ला सकें।

धन के फिजूलखर्ची समाज के एक वर्ग को अंधा बना दिया हैं। हम एक दूसरे से कम नहीं होकर एक दूसरे से आगे निकलने के प्रयास में समाज की संस्कारों की संपदा कहीं समाप्त न कर दें। इस पर हमें सोचने की जरूरत है कि इस प्रकार की प्रवृति को किस प्रकार बढ़ने से रोका जा सके। सम्मेलन इस दिशा में पहल करने के लिए सदा तत्पर रहेगा।◆

अपनी बात :

असम : गोगोई की टिप्पणी

– शम्भु चौधरी

पिछले माह असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई ने अपनी सरकार के दूसरे कार्यकाल के चौथे वर्षपूर्ति के अवसर पर मारवाड़ी समाज को आड़े हाथ लेते हुए असम के व्यापारियों को उग्रवादी दलों को धन मुहैया कराने की बात कहते हुए फैंन्सी बाजार के व्यापारियों के लिए काले व्यापारी शब्द का प्रयोग करते हुए कहा कि मंहगाई के लिए सीधे तौर पर यही काले व्यापारी जिम्मेदार हैं। आपने अपने गुस्से का इजहार करते हुए कहा कि ये लोग कांग्रेस को भी वोट नहीं देते।

यदि राज्य में 80 प्रतिशत व्यापार भी ''वेट कर प्रणाली'' द्वारा संचालित है तो आपकी सरकार सीधे तौर पर कालेबाजारी के लिए जिम्मेदार है न कि असम के व्यापारी। खाद्य पदार्थों के दाम करने कम करने के लिए भारत सरकार पर दबाव डालें तो आपकी हिम्मत की दाद दूँगा।

आदरणीय मुख्यमंत्री महोदय जी,

शायद आप भूल गए होंगे कि आज आप जिस कांग्रेस का दम भर कर इस तरह का आरोप लगा रहें हैं इसको पूरे भारतवर्ष में सींचने का कार्य इसी मारवाड़ी समाज ने दिया था। जब कांग्रेसी असम में उल्फा के आंतक से भयभीत होकर बिल में छिपे हुए थे तो मारवाड़ी समाज ने आगे बढ़कर अपने सीने में गोली खाई थी। जिस उग्रवाद को धन देने की बात आप कर रहें हैं इसका अर्थ है कि असम में आपकी सरकार, व्यापारियों को सुरक्षा देने में पूर्णत: असफल रही है, नहीं तो कोई भी व्यापारी किसी भी उग्रवादी संगठन को धन नहीं देगा इसका अर्थ है आपका प्रशासन–तंत्र पंगु हो चूका है। शायद आप अपनी इसी कमजोरी को छुपाने के लिए व्यापारी वर्ग पर अपना दोष मंडने में लगे हैं। सत्ता की आड़ लेकर आप भले ही व्यापारियों को बुरा भला कह लें या अभद्र शब्दों का प्रयोग कर लें, परन्तु मुल्य वृद्धि सारे देश में हुई है इसमें सिर्फ असम के व्यापारियों को दोषी ठहराना गैर जिम्मेदाराना है। मेरा तो मानना है कि दिल्ली में बैठी आपकी केन्द्रीय सरकार के मंत्री भी इस कालाबाजारी में संलग्न हैं। मंहगाई सिर्फ असम में नहीं आई पूरे भारतवर्ष इसकी चपेट में है। आपके केन्द्रीय खाद्य मंत्री खुद मंहगाई बढ़ाने जैसे एक बार नहीं कई बार बयान दे चुके हैं एवं इस बात को लेकर संसद में बहस भी हो चुकी हैं। आपने मारवाड़ियों की तरफ इशारा करते हुए कहा कि ये व्यापारी उनको वोट भी नहीं देते, तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि यदि कालाबाजारी करने वाले आपको वोट देते तो वे सही है? शायद असम राज्य में भी **''वेट कर प्रणाली''** लागू है और आप अच्छी तरह से जानते हैं कि असम के व्यापारी किस दर पर माल क्रय कर रहे हैं एवं किस दर पर विक्रय। चूँकि **''वेट कर प्रणाली''** में पारदर्शिता बनी रहती है। यदि राज्य में ८० प्रतिशत व्यापार भी **''वेट कर प्रणाली''** द्वारा संचालित है तो आपकी सरकार सीधे तौर पर कालेबाजारी के लिए जिम्मेदार है न कि असम के व्यापारी। आपकी सरकार खाद्य पदार्थो के दाम कम करने के लिए भारत सरकार पर दबाव डालें तो आपकी हिम्मत की दाद दूँगा। बजाय व्यापारियों को बली का बकरा बनाने के। संभवत: कुछ अंश तक आपकी बात सही भी मान ली जाए तो इससे समस्त व्यापारी जगत को न तो कालाबाजारी कहा जा सकता और न ही किसी एक राजनैतिक दल का उसे सूचक माना जा सकता। असम की जनता आप से ज्यादा बुद्धिजीवी है। समझदार एवं योग्य है कि वे आपकी इस भड़काऊ बयान से कोई ताल्लुक नहीं रखना चाहती।

गोगई साहब आप एक नेक इंसान हैं, वोट बैंक की भूख से सत्ता प्राप्त नहीं होती, लोगों के दिल में जगह बनाऐंगे तो जनता आपको पुन: लायेगी अन्यथा इस छटपटाहट को हम आपके हार का सूचक मानते हैं।◆

अमेरिका की डायरी

सीताराम शर्मा, कौस्तुभ जयंती
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

विदेश की यह मेरी सबसे लम्बी यात्रा थी–अमेरिका में ४० दिनों का प्रवास। इससे पूर्व दर्जनों यात्राएं की जो किसी सम्मेलन में भाग लेने के लिये थी या व्यवासायिक। इस बार पूर्णतया पारिवारिक–पूरे परिवार के साथ। अवसर था अटलाण्टा निवासी अनुज पुत्री के लक्ष्मी स्वरुपी पुत्री के जन्म का।

यूं तो अमेरिका कई बार यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ है लेकिन इस बार नजदीक से जानने समझने का मौका मिला। बैठकों–सेमिनारों में औपचारिक बातचीत से हटकर आम–अमेरिकी से विचार–विनिमय से बहुत कुछ जाना समझा।

अमेरिका अभी भी आर्थिक दबाब से जूझ रहा है। पुरानी चमक–दमक नहीं है। बेरोजगारी की दर में राष्ट्रपति ओबामा के प्रयासों के बावजूद कोई अधिक सुधार नहीं हुआ है। ओबामा के राष्ट्रपति निर्वाचन पर भी अमेरिका बंटा हुआ है। काले–गोरे के प्रश्न पर एक तरफ जहां ओबामा के राष्ट्रपति बनने से एक मलहम लगी है कहीं कहीं तीव्र प्रतिक्रिया भी है। ओबामा ने बहुत उम्मीदें जगाई है लेकिन उनकी लोकप्रियता में गिरावट हो रही है। अमेरिका विश्व में एक नम्बर सैनिक एंव आर्थिक ताकत की स्थिति बरकरार रखने के लिये कटिबद्ध है लेकिन आम अमेरिकी पूरी तरह आश्वस्त नहीं है उसे भय है कि अगले १०–१२ वर्षो में चीन सबसे बड़ी ताकत के रुप में उभर सकता है–यहां ओबामा की कमजोर एवं खुशामदी चीन नीति को आम अमेरिकी पसन्द नहीं कर पा रहा है।

भारत की बदलती तस्वीर एंव तरक्की की कहानी आम अमेरिकी की जुबान पर है। अन्य प्रवासी नागरिकों की तुलना में प्रवासी भारतीयों को आदर एवं सम्मान से देखा जाता है। संभवत: इसका मुख्य कारण है अमेरिका में अधिकतर भारतीय प्रवासी–शिक्षित प्रोफेशनल हैं। अमेरिकी अखबारों में भारत सम्बन्धी समाचार तो अभी भी बहुत कम है। जबकि चीन छाया रहता है, लेकिन भारत की जो भी खबरें छपती हैं उनमे अब महाराजा, हाथी एव सँपरों की कहानी नहीं होती।

मेरे प्रवास के दौरान मैंने अमेरिकी अखबारों एवं टीवी में पढ़ा–सुना कि भारत विश्व की दूसरी सबसे तेजी से बढ़ती आर्थिक व्यवस्था है। भारत अब विश्व का तीसरा क्रय शक्ति वाला देश है ५.२ बीलियन अमिरिकी डालर। भारत में २५०० इंजीनियरिंग कालेज हैं। भारत में अब १ लाख से अधिक करोड़पति एवं बहुत से अरबपति है। एक नाईजीरियन अमेरिकी टैक्सी ड्राइवर ने मुझसे कहा कि "भारत अब तीसरे विश्व का प्रगतिशील देश नहीं रहा है। भारत अब एक आर्थिक ताकत है।" एक अमेरिकन अर्थशास्त्री ने तो यहां तक कह डाला कि भारत २०२० में विश्व की सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था के रुप में उभरेगा। उसने कहा ओबामा को चीन के बजाय भारत से सम्बन्धों को महत्व देना चाहिये। भारत की आर्थिक प्रगति अमेरिका को ताकत प्रदान करेगी जबकि चीन उसे कमजोर करेगा। उसके अनुसार चीन डालर को कमजोर करना चाहता है।

प्रवासी भारतीयों की स्थिति के विषय में यह जानकारी चौकाने वाली थी कि अमेरिका की १० प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के चैयरमैन भारतीय मूल के अमेरिकी है– अजय बंगा (मास्टरकार्ड विश्वव्यापी) फ्रांसिस डिसूजा (कागनिजेंट) संजय झा (मोटोरोला), सूर्या महापात्रा (क्वेस्ट डायगनोष्टिक) जय नागरकालती (सिगमा) शान्तनु नारायण (एडोव सिस्टम) इन्द्रा नूई (पेप्सीको) दिनेश पालिराड (हरमन इण्टरनेशनल) विक्रम पण्डित (सिटी ग्रुप) अभिषेक तालवलकर (एल.एस.आई कारपोरेशन)।

अमेरिका में मुझे भारतीय होने पर पहली बार गर्व का बोध हो रहा था।◆

समाज सेवा – दशा और दिशा

रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

भारत देश के हर छोटे–बड़े कस्बे और नगर में मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित ऐसे संगठन सक्रियता से कार्य करते हुए मिलते हैं जिनका उद्धेश्य समाज का उत्थान और समाज की सेवा है। कुछ संगठन तो लम्बी अवधि से कार्य करते आ रहे हैं। उनके सदस्यों की संख्या भी सैंकड़ों और हजारों में है। वस्तुत संगठन के इस वृहद् स्वरूप के मूल में उसके सदस्यों की कर्मठता, समाज के प्रति आस्था, समर्पण भावना, एक जुटता तथा सामाजिक दायित्व बोध की समझ ही है। कदाचित् ऐसे संगठनों की नींव रखनेवालों तथा उसकी योजनाओं और उद्धेश्यों की पूर्णता में अपना निष्काम योगदान देने वाले उसके जागरूक सदस्यों के संस्कारों में यह भावनाएं ही रही होंगी कि–

ध्यैयनिष्ठ हो अगर समर्पण विनयपूर्ण हो प्रति पद।
सहज साधनमय जीवन हो राम कृपा हो सम्पद।।
मेवा खाने की न लालसा हो यदि अपने मन में,
सेवा का छोटा सा पौधा बन सकता है बरगद।।

समाज में किसी भी तरह की कोई आपदा आई हो, समाज का कोई सदस्य किसी तरह की परेशानी में घिरा हो, समाज में किसी तरह का अभाव हो उसके निराकरण के लिए संगठन का हर सदस्य तत्पर रहा है। ये संगठन लोकप्रिय इसलिए हुए कि इसकी योजनाओं में समय–समय पर समाज के निरिक्षण को वरियता दी गई। ऐसा तभी संभव होता है जब संगठन का प्रत्येक सदस्य अपने हृदय में इस अमृत वाक्य को आत्मसात करले कि–

मुझे तो इष्ट जन सेवा। सदा सच्ची भुवन सेवा।।

संगठनों द्वारा की जाने वाली समर्पित सेवा से लाभान्वित समाज को देखते हुए समाज के उदारमना सदस्यों ने सेवा कार्यों को संचालित रखने के लिए खुले हृदय से संगठनों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया। फलत: संगठन निष्काम सेवा पथ पर गतिमान रहे और आज भी हैं।

समय परिवर्तनशील है। समय के परिवर्तन के साथ–साथ सामाजिक मापदण्ड बदलते रहे हैं। यह एक शाश्वत प्रक्रिया है। इसके कारण या प्रवाह में अथवा प्रभाव में मानव की सोच में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। सोच का परिवर्तन उलट धारा में चलने लगा तो उसने सामाजिक सदस्यों की सोच को परहित की बजाय स्वहित की सोचने तक सीमित कर दिया। समाज के उदारमना सदस्यों द्वारा सामाजिक संगठनों को प्रदान किया जानेवाला आर्थिक अनुदान और आधार को चंदे की संज्ञा दे दी गई। चंदा भी फिर चंदा न रह कर धन्धा बन गया। जिसके वशीभूत नित नये सामाजिक व धार्मिक संगठनों का समाज में गठन होने लगा, चंदा उगाही होने लगी। चंदे की उगाही में सामाजिक भावना लोप होती गई इस कार्य में व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं व्यावसायिक सम्बन्धों का आधार लिया जाने लगा। जो जितना अधिक चंदा इकठ्ठा करे वह संगठन में उतना ही ऊंचा पद पाये का रिवाज तो चला ही साथ ही सेवा के नाम पर समाज से लिए गये (बल्कि ये कहूं वसूले गये) पैसों का भरपूर दुरुपयोग होने लगा। संगठन में कुर्सी की लड़ाई शुरु हो गई। एक वाक्य में कहूं तो चंदा बना धन्धा तो सेवा कार्य हुआ मंदा। समाज सेवा के नाम पर स्वहित के संचालित किये जा रहे ऐसे संगठनों की स्वार्थपूर्ण भावनाओं के कारण समाज सेवा जैसी लोक हितकारी भावना प्रश्नवाचक में घिरती जा रही है।

हमें अब गंभीरता पूर्वक इस सन्दर्भ में सोचना चाहिए क्योंकि जो संगठन लम्बे समय से समाज के लिए नि:स्वार्थ भावना से कार्य करते आ रहे हैं उन पर भी इस प्रश्नवाचक ने प्रभावित किया है। आर्थिक योगदान प्राप्ति के पक्ष में वे शनै: शनै: कमजोर होते जा रहै हैं। समाजोत्थान के लिए बनाई गई उनकी योजनाएं अर्थाभाव के कारण पूर्णता तक नहीं पहुंच पाती और अगर पहुंचती भी है तो यथा समय नहीं पहुंच पाती, जिसके कारण समाज के सदस्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आज इस पक्ष में भी सामाजिक जागरूकता लानी जरूरी है। मेरे कहने का तत्पर्य यह नहीं हैं कि समाज में हुए नये संगठन बंद कर दिये जाने चाहिए। नहीं मेरा आशय यह बिल्कुल नहीं है। मैं तो केवल यह बताना चाहता हूं कि दिशा गलत हो तो दशा खराब होती है। हमें आज समाज सेवा की दशा और दिशा को ठीक करने की आवश्यकता है। सेवा में मेवा प्राप्ति की नीति न रख कर परमानन्द की तलाश करनी है। तभी हम समाज से गहरा जुड़ाव बना सकेंगे और समाज का आत्मिक स्नेह पा सकेंगे।◆

भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं समाजसेवी स्वर्गीय भंवरमल सिंघी की स्मृति में गठित भंवरमल सिंघी समाज सेवा न्यास द्वारा समाज सुधार के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए स्थापित भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार सम्मेलन के 75 वें स्थापना दिवस के अवसर पर प्रदान किया जाएगा।

उक्त पुरस्कार हेतु प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से 2008–2010 कार्यकाल में समाज सेवा कार्य के आधार पर उपयुक्त नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को 25 सितम्बर 2010 तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

श्री सीताराम शर्मा, श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्री नन्दलाल रुँगटा, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री सज्जन भजनका, श्री आत्माराम सोन्थालिया, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री पुष्कर लाल केडिया।

संयोजक :– श्री संजय हरलालका

सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व0 सीतारामजी रुँगटा की स्मृति में राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु राजस्थानी साहित्यकारों को देने के लिए पुरस्कार की स्थापना की गई है।

प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से अनुरोध है कि 2008–2010 में सम्पादित साहित्य कृतियों हेतु पुरस्कार के लिए नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को 25 सितम्बर 2010 तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

श्री सीताराम शर्मा, श्री रतनलाल शाह, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री नन्दलाल रुँगटा, श्री प्रहलाद राय अग्रवाल, श्री नथमल केड़िया, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री रामअवतार पोद्दार।

संयोजक :– श्री शम्भु चौधरी

उपरोक्त पुरस्कार सम्मेलन के 75 वें स्थापना दिवस पर दिए जायेंगें।

आडम्बर और दिखावा - समाज के लिए अभिशाप
विषय पर संगोष्ठी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने दी कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी (१९७८) लिमिटेड हॉल, १२, आर. एन. मुखर्जी रोड, ४ तल्ला, कोलकाता–१ में दिनांक १५ मई २०१० को **''आडम्बर और दिखावा–समाज के लिए अभिशाप''** विषय पर संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा ने की एवं विषय प्रवर्तन सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहन लाल तुलस्यान ने किया। गोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री पुष्कर लाल केडिया और श्री जुगल किशोर जैथलिया थे। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार और राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया भी गोष्ठी में मौजूद थे।

सभापति श्री रुंगटा ने कहा कि समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए सम्मेलन के बैनर तले समय–समय पर गोष्ठी आयोजित की जाती है। आपने कहा कि जन्म से मृत्यु काल तक हमलोग आडम्बर में डूबे रहते हैं। आडम्बर और दिखावा रूपी कुरीतियों से निजात पाने के लिए आपने व्यक्तिगत और सामूहिक पहल करने की बात कही। आपने कहा कि सकारात्मक सोच रखकर इससे छूटकारा पा सकते हैं। मारवाड़ी युवा मंच और मारवाड़ी युवा महिला संगठन से आपने इन कुरीतियों के खिलाफ समाज में जागरूकता लाने का आग्रह किया। आपने कहा कि बारात के स्वागत और खान–पान पर हमलोग फिजूलखर्च करते हैं जो एक तरह की सामाजिक कुरीति ही है। समाज के उच्च, अभिजात वर्ग से आग्रह करते हुए आपने कहा कि सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में उन सभी का भी सहयोग चाहिए। अ.भा.मा.स. के बारे में आपने कहा कि यह संगठन समाज से कुरीतियों को मिटाने के लिए प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि हमारे समाज में दिनोंदिन आडम्बर और दिखावे की प्रवृत्ति में वृद्धि होती जा रही है जो समाज के लिए घातक है। आपने कहा कि धार्मिक आयोजन जो सादगी से मनाया जाना चाहिए वहां भी हमलोग अनावश्यक खर्च कर देते हैं। समाज इस कुरीति को मिटाने के लिए दृढ़ संकल्प हो।

सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि हमारे पूर्वज संचय प्रवृत्ति के थे जिसके कारण हमलोग उन्नति करते चले गए किंतु आज स्थिति विपरीत हो गई है। समाज अपनी संचय प्रवृत्ति को छोड़कर आडम्बर और दिखावे के चंगुल में फंस चुका है जिससे समाज खोखला होता जा रहा है। शादी विवाह, जन्मदिन के अवसर पर फिजूलखर्ची को अनावश्यक करार देते

हुए उन्होंने कहा कि हमलोग सम्मिलित प्रयास से इसपर रोक लगाएं। शादी और जन्मदिन के अवसर पर महंगे आमंत्रण कार्ड बाटे जाने पर आपने चिंता जाहिर की। उन्होंने कहा कि फिजूलखर्ची रोकना भी समाज सेवा की श्रेणी में ही आता है। आडंबर और दिखावा वाकई समाज के लिए संगीन है अत: हमलोगों को उसका प्रतिरोध करना ही चाहिए।

गोष्ठी में वक्ता श्री जुगल किशोर जैथलिया ने आडम्बर और दिखावा शब्द को पर्यायवाची करार दिया। महापुरुषों के जीवन से नसीहत लेने की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें महापुरुषों के चरित्र को सामने रखकर चरित्र का गठन करना चाहिए तथा महान उद्देश्य को सामने रखकर जीना चाहिए। समाज के संस्कारित लोगों से कुप्रथा को मिटाने में योगदान देने का आग्रह उन्होंने किया। पश्चिमी सभ्यता की विकट होड़ से बचने का आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि यदि हमलोग पाश्चात्य सभ्यता की अंधानुकरण से नहीं बचें तो हमारा विनाश सुनिश्चित है। विवाह समारोह भारतीय तौर–तरीके से किये जाने का विचार उन्होंने गोष्ठी में रखा। उन्होंने कहा कि समाज संस्कारवान तभी बना रहेगा जब हमलोग सत्संग, प्रार्थना करेंगे। समाज में संवेदनशीलता की कमी के बारे में उन्होंने कहा कि साहित्य का पठन–पाठन नहीं होने से समाज की संवेदना मरती जा रही है।

वक्ता श्री पुष्कर लाल केडिया ने कहा कि यह संगोष्ठी कम आंदोलन ज्यादा है। समाज में विवाह, जन्मदिन इत्यादि के मौके पर फिजूलखर्ची पर चिंता प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि इसे रोकने के लिए हमलोग आन्दोलन चलाएं। धार्मिक आयोजनों में हो रहे अनावश्यक खर्च को उन्होंने अनुचित करार दिया। उन्होंने कहा कि हमारे समाज का गुण संचय प्रवृत्ति थी किंतु आज लोग उसे भूलते जा रहे हैं। छात्रों को निबंध, रेखाचित्र, वाद–विवाद प्रतियोगिता के माध्यम सामाजिक कुरीतियों के बारे में जागरूक करने की मंशा उन्होंने जाहिर की। उन्होंने कहा कि राज्य शाखा केन्द्रीय शाखा को साथ लेकर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ मुहिम छेड़े।

गोष्ठी में विचार रखते हुए श्री नन्दलाल सिंघानियां ने कहा कि तलाक और परिवार में बिखराव भी आडंबर और दिखावा से ही जुड़ा है।

श्री ओम लडिया ने कहा कि आडंबर और दिखावा बिल्कुल हमारे समाज की सामयिक समस्या है। उन्होंने कहा कि इसके पोषक भी हमलोग ही हैं अत: इसका सुधार भी हमें ही करना होगा। श्री अरुण मल्लावत ने कहा कि पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी को इस तरह की गोष्ठी में शरीक करें ताकि उन लोगों में इसके बारे में जागरूकता उत्पन्न हो।

गोष्ठी का संचालन श्री प्रदीप जीवराजका तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री कैलाश पति तोदी ने किया।

अंत में आचार्य महाप्रज्ञ और पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत के निधन पर एक मिनट का मौन रखा गया।◆

स्थायी समिति के सदस्यों की षष्ठम बैठक

(7 जून 2010 को संपन्न)

कई प्रस्तावों पर चर्चा :

सभा को सम्बोधित करते हुए सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्यों की षष्ठम बैठक सोमवार ७ जून २०१० को सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा की अध्यक्षता में एक्सप्रेस टावर, ४२ए, शेक्सपियर सारणी, ८वां तल्ला, कोलकाता–१७ में संपन्न हुई। बैठक में श्री नन्दलाल रुंगटा, श्री सीताराम शर्मा, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री संजय हरलालका, श्री विजय गुजरवासिया, श्री घनश्याम शर्मा, श्री ओम लडिया, श्री विश्वनाथ सराफ, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा, श्री रामनिवास चोटिया, श्री के. के. डोकानिया, श्री रविन्द्र लडिया मौजूद थे।

बैठक की शुरुआत करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने कहा कि सम्मेलन की सारी गतिविधियां समाज विकास में प्रकाशित होती रहती हैं। आपने कहा कि सम्मेलन के १९३५ से अबतक के भूतपूर्व अध्यक्षों और महामंत्रियों की तस्वीर एक ही तरह के फ्रेम में मढ़वाकर सम्मेलन कार्यालय में लगाने का जो निर्णय लिया गया था वह कार्यालय की मरम्मत रूक जाने के कारण अभी शिथिल है। सम्मेलन की वेबसाइट बनाये जाने के बारे में आपने कहा कि यह कार्य अभी पूरा नहीं हो पाया है। आदर्श विवाह को प्रोत्साहित करने के बारे में आपने कहा कि समाज विकास में इस विषय पर लेख प्रकाशित हो। कौस्तुभ जयंती के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति को बुलाये जाने के मद्देनजर आपने कहा कि महामहिम का आना अभी तय नहीं हुआ है। कौस्तुभ जयंती के मौके पर डाक टिकट जारी किये जाने के बारे में आपने कहा कि संबंधित विभाग को इस बारे में पत्र भेजा गया है, दूसरी बार भी पत्र भेजा जाएगा।

वर्तमान सदस्यता पर चिंता जाहिर करते हुए आपने कहा कि जिस संख्या में सदस्य सम्मेलन से जुड़ने चाहिए वह नहीं जुड़े हैं। पूरे भारतवर्ष में समाज के सिर्फ १२७ व्यक्ति के संरक्षक सदस्य के रूप में सम्मेलन से जुड़ने पर आपने चिंता जाहिर की। आपने सदस्यता अभियान को धीमा करार देते हुए कहा कि सदस्य सम्मेलन की रीढ़ हैं अत: संगठन तभी और मजबूत होगा जब नये सदस्य सम्मेलन से जुड़ेंगे। अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन निर्माण के बारे में आपने कहा कि एमलगेशन का काम पूरा हो गया है किंतु म्यूटेशन का काम अभी बाकी है।

विवाह समारोह के मद्देनजर आपने कहा कि सामूहिक विवाह, वैवाहिक परिचय सम्मेलन और आदर्श विवाह समाज में जरूर हो किंतु तरजीह आदर्श विवाह को ही दें। पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की आर्थिक अभावग्रस्त जोड़े को एक लाख रुपये तक देने के निर्णय का आपने भूरि – भूरि प्रशंसा की तथा प्रांत के अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया से आग्रह किया कि आदर्श विवाह करनेवाले जोड़े को भी एक लाख रुपये तक की राशि देने पर विचार करें। समाज के धनी वर्ग से अपने पुत्र – पुत्री की सामूहिक शादी करने का आग्रह

करते हुए आपने कहा कि वे लोग यदि ऐसा करेंगे तो समाज के लिए अनुकरणीय रहेगा। सामूहिक विवाह और परिचय सम्मेलन को आपने विवाह का कारगर तरीका बताया साथ ही कहा कि सादगीपूर्ण आदर्श विवाह को हमलोग ज्यादा तरजीह दें। सीताराम रुंगटा राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार के बारे में आपने कहा कि अब प्रत्येक साल स्थापना दिवस के मौके पर राजस्थानी भाषा के उत्कृष्ट रचनाकार को २१ हजार रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। पहले यह पुरस्कार ११ हजार रुपये का था जो कि दो वर्ष के अंतराल पर दिया जाता था। आपने कहा कि इस हेतु पहले से बैंक में जमा एक लाख रुपयों में चार लाख रुपये और उनकी तरफ से दिए गए हैं जिसको मिलाकर ५ लाख रुपये फिक्सड डिपाजिट कराने का इरादा है तथा इससे होनेवाली ब्याज रूपी आय से पुरस्कार राशि एवं सम्मानित व्यक्ति के रहने व आने जाने का खर्च किया जाएगा। आपने कहा कि सम्मेलन का उद्देश्य समरसता भी है और उस भाव को बरकरार रखते हुए बंगला भाषी साहित्यकार को भी पुरस्कृत करने की योजना है।

अलग–अलग सदस्यता की चर्चा करते हुए आपने कहा कि यह समस्या सभी प्रांतों में है, इस पर संविधान संशोधन कमेटी कार्य कर रही हैं। एकल सदस्यता के बारे में आपने कहा कि इस पर गंभीरता से विचार चल रहा है किंतु जो लोग आर्थिक रूप से संपन्न हैं वे प्रांत एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन दोनों जगह की सदस्यता लेने में सक्षम हैं। सामाजिक कुरीतियों को जड़ से मिटाने की चर्चा करते हुए आपने कहा कि कुरीतियां एक तरह का सामाजिक रोग है जिसका उन्मूलन हमलोगों को करना पड़ेगा। मारवाड़ी युवा मंच, मारवाड़ी महिला मंच और सम्मेलन की प्रांतीय शाखा तीनों संगठनों की संयुक्त कार्यशाला आयोजित करने की चर्चा करते हुए आपने की तथा कहा कि इस तरह के वर्कशॉप से वैचारिक आदान–प्रदान तो होंगे ही साथ ही कार्यात्मक संबंध भी बनेंगे। आपने स्थायी समिति के सदस्यों से सम्मेलन कार्यालय १० मिनट के लिए मुआयना हेतु जाने का आग्रह किया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने महामंत्री की रिपोर्ट पढ़ी और अपना स्पष्टीकरण दिया। सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने आय – व्यय का लेखा जोखा प्रस्तुत किया।

श्री विजय गुजरवासिया ने कहा कि सामूहिक विवाह के आयोजन में वर तो आते हैं किंतु वधू नहीं आती। उन्होंने बताया कि पश्चिम बंगाल प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन सामूहिक विवाह, एकल विवाह करनेवाले जरूरतमंद जोड़े को एक लाख रुपये देने का निर्णय लिया है। श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सामूहिक विवाह में दिक्कत आती है अत: परिचय सम्मेलन करवाइए। श्री संजय हरलालका ने कहा कि परिचय सम्मेलन में लड़कियों की संख्या अत्यंत कम होती है जिससे परिचय सम्मेलन सार्थक नहीं हो पा रहे हैं। परिचय सम्मेलन करने के पहले हमें इस दिशा में भी सोचना चाहिए। श्री ओम लडिया ने कहा कि हमलोग आदर्श विवाह को ही प्रश्रय दें। उन्होंने कहा कि कोलकाता में आदर्श विवाह के लिए एक जगह निश्चित हो तथा सम्मेलन इस दिशा में सार्थक पहल करे। श्री के. के. डोकानिया ने कहा कि जमीनी स्तर पर भी इस तरह का कार्य हो। कोलकाता में विवाह करना काफी खर्चीला है। विवाह कार्य में दलाल सक्रिय हैं। श्री जुगल किशोर जैथलिया ने कहा कि समाज के युवक–युवतियों के विवाह हेतु सम्मेलन एक फैलिसिटेड एजेंसी की तरह काम करे। श्री गोविंद शर्मा ने कहा कि सम्मेलन समाज की प्रतिनिधि संस्था है अत: रास्ता दिखाए। उन्होंने कहा कि कार्य को अंजाम देने के लिए हमलोगों को साहसी होना पड़ेगा। श्री रामअवतार पोद्दार ने कहा कि समाज सुधार निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। मृतक भोज, पर्दा–प्रथा, बालिका शिक्षा और अन्य सामाजिक कुरीतियां सम्मेलन के सक्रिय हस्तक्षेप से कम हुई हैं। सम्मेलन का कार्य सामाजिक सुधारों हेतु निरन्तर प्रयास करते रहना है।◆

महामंत्री की रिपोर्ट

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति के सभी सम्मानित सदस्यों का मैं समिति की षष्ठम बैठक में हार्दिक स्वागत करता हूँ। स्थायी समिति की वर्तमान सत्र की पंचम बैठक सोमवार, १८ जनवरी २०१० को सम्मेलन के कोलकाता स्थित केन्द्रीय कार्यालय में सम्पन्न हुई थी। उसके बाद हुए सम्मेलन के संक्षिप्त कार्यों की जानकारी यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ।

१९ जनवरी २०१० को राष्ट्रीय अध्यक्ष के कोलकाता स्थित कार्यालय में राजस्थानी भाषा सब कमेटी की बैठक कमेटी के चैयरमेन श्री रतन शाह की अध्यक्षता में हुई।

गणतंत्र दिवस पर सम्मेलन भवन में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने झंडोत्तोलन किया।

३१ जनवरी २०१० को मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन की तरफ से कोलकाता के टेंगरा के खाल धार बस्ती के पास विगत दिनों लगी आग से बेघर हुए १२५ परिवारों के बीच खाना बनाने का स्टोव वितरित किया गाय। इस मौके पर सांसद सुदीप बंदोपाध्याय ने कहा कि सम्मेलन ने बेघर हुए लोगों की सहायता हेतु हाथ बढ़ाकर सराहनीय कार्य किया है। श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि सम्मेलन ने बिहार की बाढ़ हो या पश्चिम का आयला तूफान सब समय सहायता का हाथ बढ़ाया है।

३०–३१ जनवरी को झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन रांची स्थित मारवाड़ी भवन में सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन झारखण्ड के मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन ने किया।

सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह कमेटी की प्रथम बैठक ५ फरवरी २०१० को बंगाल रोईंग क्लब में हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कमेटी के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि इस वर्ष पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना है। उन्होंने बताया कि कोलकाता के आमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन के शिलान्यास, ७५ जोड़ों का सामूहिक विवाह, ७५ जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति, शिक्षा, खेल, समाजसेवा, लेखन आदि क्षेत्र में ख्याति अर्जित करने वाले देश के पांच व्यक्तियों को सम्मानित करने की योजना है। इसके अलावा कोलकाता में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल को आमंत्रित किया जा रहा है। आपने बताया कि इस वर्ष गुजरात, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तरांचल प्रांत का गठन करने की दिशा में कदम उठाये जा रहे हैं तथा पूरे देश में ७५०० नये सदस्य बनाने हेतु सदस्यता अभियान चल रहा है। इस वर्ष सम्मेलन के ७५ वर्षों का इतिहास पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की योजना है तथा भारत सरकार से अनुरोध किया जायेगा कि इस मौके पर वह डाक टिकट जारी करे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने कहा कि सम्मेलन की अपनी वेबसाईट शुरू की जायेगी जिसमें सम्मेलन से सम्बन्धी समस्त जानकारियों का समावेश होगा।

६ फरवरी को पूर्व केन्द्रीय मंत्री, राज्यसभा के पूर्व उपाध्यक्ष तथा मारवाड़ी सम्मेलन के हितैषी श्री रामनिवास मिर्धा के निधन पर शोक सभा का आयोजन मर्चेन्ट चेम्बर ऑफ हाल, कोलकाता में किया गया। शोक सभा की अध्यक्षता श्री नन्दलाल रूँगटा ने की।

७ फरवरी को पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दशम् अधिवेशन महाजाति सदन के एनेक्सी हॉल में सम्पन्न हुआ जिसमें नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने पद भार ग्रहण किया।

सम्मेलन द्वारा सामाजिक कुरीतियां दूर करने एवं समाज में जागरूकता लाने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में २० फरवरी २०१० को दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी हॉल में **''बढ़ते तलाक–चिंता एवं चिंतन''** विषय पर आयोजित संगोष्ठी में एक स्वर में यह बात उभर कर आई कि युवा पीढ़ी में सहनशीलता की कमी की वजह से तलाक बढ़ रहे हैं। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि तलाक के लिए एक ओर जहां पारिवारिक व सामाजिक कारण जिम्मेवार हैं वहीं युवा पीढ़ी में सहनशीलता का ह्रास होना एक मुख्य कारण है। उन्होंन कहा कि संयुक्त परिवार रहने से सहन करने की शक्ति आती है। किन्तु आजकल एकल परिवार हो गये हैं जहां छोटी सी बात पर सहन शक्ति जवाब दे देती है और नौबत तलाक की आ जाती है। उन्होंने कहा कि तलाक रोकने हेतु न्यायपालिका ने तो कदम उठाने शुरू कर दिये हैं। तलाक

को अंतिम विकल्प बताते हुए आपने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन कार्य अपनी खामियों पर चिंतन करना है।

रविवार, २८ मार्च को चैम्बर भवन, बिष्टुपुर, जमशेदपुर, झारखण्ड में सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारण समिति अखिल भारती समिति की बैठक हुई जिसमें अध्यक्ष महोदय ने विवाह समारोह में बढ़ रही फिजूलखर्ची, मद्यपान, नाच–गान, तलाक, परिवार में हो रहे बिखराव जैसी सामाजिक समस्याओं को समाज के साझा प्रयास से रोकने का आग्रह किया। आपने हमारे पूर्वजों द्वारा बनाई गई गोशाला, अस्पताल, धर्मशालाओं की दुर्दशा का जिक्र करते हुए कहा कि आज इन्हें बचाने की जरूरत है।

सम्मेलन की डायरेक्टरी उपसमिति की बैठक २३ अप्रैल को राष्ट्रीय अध्यक्ष के कोलकाता स्थित कार्यालय में हुई जिसमें समिति के चैयरमेन श्री रविन्द्र लढिया ने बताया कि जून माह में नई डायरेक्टरी प्रकाशित हो जायेगी।

सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की पंचम बैठक २४ अप्रैल २०१० को हिन्दुस्तान क्लब में हुई जिसकी अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा ने की। बैठक में सर्वसम्मति से सम्मेलन का उच्च शिक्षा कोष गठित करने का निर्णय लिया गया। १० लाख रुपये से बनने वाले इस कोष हेतु हरदम यह प्रयास रहेगा कि कोष की राशि इससे कम न हो। इसके अलावा श्री रतन शाह के सुझाव पर सम्मेलन के प्रांतों, जिलों एवं शाखाओं के माध्यम से मारवाड़ियों की जनगणना कराने का भी निर्णय लिया गया। इस हेतु सभी प्रांतों को पत्र भेज दिया गया है। चार माह के भीतर इस कार्य को बखूबी अंजाम देने वाले प्रांतों, जिलों एवं शाखाओं को सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती वर्ष में ही सम्मानित भी किया जायेगा।

सम्मेलन द्वारा शनिवार १५ मई २०१० को **आडम्बर और दिखावा–समाज के लिए अभिशाप** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन दी कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी (१९७८) लिमिटेड हॉल, १२, आर. एन. मुखर्जी रोड में किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा ने की। उन्होंने अपने संबोधित में कहा कि सम्मेलन के बैनर तले समय–समय पर सामाजिक विषयों पर संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। जिसका मकसद लोगों को सही राह दिखाना होता है। इस मौके पर पुष्करलाल केडिया, जुगलकिशोर जैथलिया, मोहनलाल तुलस्यान के अलावा सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया ने भी वक्तव्य रखा। वक्ताओं ने कहा कि यह दुखद है कि युवा पीढ़ी पश्चिम की तरफ बढ़ती जा रही है। इन लोगों ने उदाहरण देते हुए कहा कि सूर्य भी जब पश्चिम की तरफ बढ़ता है तो उसे अस्त होना पड़ता है। इसलिए अगर अस्त (समाप्त) होने से बचना है तो पश्चिम की तरफ बढ़ते कदम को रोकना होगा।

सम्मेलन द्वारा प्रत्येक दो वर्ष में दिया जाने वाला ११,००० रु. की राशि वाला राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार, जो कि स्व. सीताराम रुंगटा के नाम पर दिया जाता है, अब प्रत्येक वर्ष स्थापना दिवस समारोह पर दिया जायेगा। इसके लिए पहले से एक लाख की राशि फिक्स डिपाजिट थी। अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने अपने पूज्य पिताजी के नाम पर दिये जाने वाले इस सम्मान हेतु और ४ लाख रुपये दिये सम्मेलन को दिये हैं जिन्हें भी फिक्स डिपाजिट कराया जा रहा है। अब से सम्मान की राशि बढाकर २१००० रु. कर दी गई है। इसके साथ ही सम्मानित व्यक्ति के आने–जाने का भाड़ा, रहने आदि का खर्च फिक्स डिपाजिट से प्राप्त ब्याज की राशि से हो जायेगा।

सम्मेलन को आयकर की धारा ८०जी का प्रमाणपत्र मिल गया है।

आपको बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि पहली बार सम्मेलन के सभी संरक्षक एवं आजीवन सदस्यों को सम्मेलन के प्रतीक चिन्ह (लेपल पिन) देने की जो बात अध्यक्ष ने स्थायी समिति की बैठक में कही थी वे लेपल पिन बनकर आ गये हैं जिन्हें शीघ्र ही सभी सदस्यों को भेजा जायेगा। इसके अलावा सभी संरक्षक व आजीवन सदस्यों को पहली बार सदस्यता प्रमाण पत्र देने का प्रयास भी किया जा रहा है। अभी हाल में ही सम्पन्न हुए कोलकाता नगर निगम चुनाव में मारवाड़ी समाज की मीनादेवी पुरोहित, सुनीता झंवर, श्वेता इंदोरिया तथा विजय ओझा ने जीत दर्ज कर समाज का गौरव बढ़ाया है। सम्मेलन पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन से अनुरोध करता है कि वे इन पार्षदों का अभिनन्दन करें ताकि अधिक से अधिक समाज के लोगों की रूचि राजनीति की ओर हो।

हमारा लक्ष्य कौस्तुभ जयंती वर्ष में ७५०० नये सदस्य बनाने का है जिसमें आप सबका सहयोग चाहिए।◆

''धरती धोरां री'' गीत के अमर रचयिता

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया

का सम्पूर्ण साहित्य

सुलभ मूल्य पर प्राप्त करें

1) कन्हैयालाल सेठिया समग्र (राजस्थानी)

पृष्ठ 704 (सजिल्द) मूल्य 600/–

(सेठियाजी के सभी १४ राजस्थानी ग्रन्थ एवं कतिपय अप्रकाशित रचनायें एक ही जिल्द में)

2) कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी–1)

पृष्ठ 704 (सजिल्द) मूल्य 600/–

(१९३६ ई० से १९७५ ई० तक रचित वनफूल से अनाम तक १० हिन्दी ग्रन्थ)

3) कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी–2)

पृष्ठ 720 (सजिल्द) मूल्य 600/–

(१९७६ ई० से २००५ ई० तक रचित निर्ग्रन्थ से त्रयी तक ८ हिन्दी एवं ताजमहल तथा गुलचीं दो उर्दू ग्रंथ)

4) कन्हैयालाल सेठिया समग्र–4 (अनुवाद खंड)

पृष्ठ 784 (सजिल्द) मूल्य 700/–

सेठियाजी की रचनाओं का अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद (साथ में मूल रचना भी)।

5) कन्हैयालाल सेठिया – चुनी हुई कविताएँ

पृष्ठ 116 मूल्य 100/–

(सेठियाजी की राजस्थानी एवं हिन्दी की प्रतिनिधि रचनाएँ)

:: सह सम्पादक ::

महावीर प्रसाद बजाज

09830063052

:: सम्पादक ::

जुगलकिशोर जैथलिया

09830341747

(सभी ग्रन्थों को एक साथ मँगाने पर ३०% विशेष छूट, डाक व्यय अतिरिक्त)

❑❑❑

:: प्रकाशक ::

राजस्थान परिषद

2–बी, नन्दो मल्लिक लेन, कोलकाता–700006

दूरभाष (033) 25306074

(राजस्थान परिषद के नाम से कोलकाता के किसी बैंक पर ड्राफ्ट के साथ अपना आदेश भेजें या परिषद के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के बचत खाता नं. 11135277311 में जमा करा कर सूचित करें)

हमारी नदियां गन्दे नाले बन रही है

– त्रिलोकी दास खण्डेलवाल, मानद महासचिव
सोशल सिक्यूरिटी फाउंडेशन, जयपुर

पानी, पर्यावरण और जलवायु हमारी इक्कीसवीं शताब्दी के पहले दशक की विकराल समस्यायें हैं। सारा संसार कोपनहेगन में एकत्रित होकर प्रकृति के कोप के कारण हाहाकर कर रहा है और जलवायु परिवर्तन को पर्यावरण बचाने और जल स्त्रोतो को बढ़ाने की दृष्टि से नई टैक्नोलोजी की खोज पर एक मत है। पृथ्वी, आकाश और समुद्र तीनों ही को हमारे विकास ने प्रदूषित कर दिया है और विकसित तथा विकासशील दोनों ही प्रकार के राष्ट्र **''लिमिटस ऑफ ग्रोथ''** की जगह अब लिमिटस टू ग्रोथ पर बहस कर रहे हैं। शायद एटम बम का खतरा अब उतना भयानक नहीं लगता जितना कि ''पाल्युटेड प्लेनेट'' की यह संभावना कि कुछ दशकों बाद .यहां जो भी सांस लेगा, वह संक्रमित होकर बीमार हो जायेगा। समुद्र तटों से जो मछलियां चुनकर लाई जायेगी व मरी हुई होगी या उनको खाने वाले कुछ घंटो में चल बसेंगे। जमीन का जहर पशु, पक्षी, पौधे तथा वनस्पति को इतना प्रदूषित और विषाक्त बना देगा कि जब तक हमारे वैज्ञानिक इस प्रगति का कोई दूसरा विकल्प नहीं ढूंढ लेते, हमारी सभ्यता का यह वैश्विक संकट हमें भारी त्रासदी में धकेलने जा रहा है।

एक प्रायद्वीप के रूप में भारत की सीमायें तीनों ओर से समुद्रों से घिरी है। दर्जनों नदियों के जल से सिंचित हमारा यह भूभाग मानसून की वर्षा से एक खेतिहर प्रदेश रहा है। गंगा और सिंध जैसी नदियाँ हमारे गंगा सिंध के मैदान को हरा भरा रखती है। पांच नदियों का पंजाब और ब्रह्मपुत्र के अथाह जल से लहलहाता हमारा उत्तर पूर्व प्राकृति संसाधनों की विपुलता से हमें एक सम्पन्न राष्ट्र बनाता है। दक्षिण की कृष्णा, गोदावरी, कावेरी हमारे प्रदेशों की जीवन रेखायें है और विध्यांचल को हरियाली बांटने वाली हमारी नर्मदा, ताप्ती और माही केवल पानी और वनस्पति ही नही देती, वरन् फल, फूल, जंगल वन सम्पदा और धन धान्य से पूरे देश को आपूर्ति कर एक ऐसा राष्ट्र बनाती है जो वैश्विक प्रदूषण के बावजूद भी एक खुशहाल और समृद्ध खेतिहर राष्ट्र बना रह सकता है।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि संसार की सभी सभ्यतायें नदियों के तटों पर विकसित हुई है। भारत में सिन्धु नदी की सभ्यता और गंगा तट की सभ्यताओं ने पूरे संसार को वह आध्यात्मिक संस्कृति दी है जिस पर हमारी पीढ़ियां सदा सर्वदा गर्व करती रहेंगी। पतित पावनी भागीरथी, यमुना के पुलिनों की कृष्ण लीलायें, ब्रह्मपुत्र की अहोम सभ्यता और कावेरी का पानी पीकर बलिष्ठ हुई द्रविड़ सभ्यता इसके प्रमाण है, कि भारत की नदियों ने ही भारत को भारत बनाया है। यदि ये सभी नदियां अपने प्राकृति रूप में यथावत बहती रहे तो हम संसार के महानतम राष्ट्रों के साथ अपने विकास की लड़ाई लड़ते हुए आगे की पंक्ति में खड़े रह सकते हैं।

दुर्भाग्य से गत साठ वर्षों में देश के विकास की योजना बनाने वालों ने हमारी प्राकृतिक सम्पदा के दोहन के विषय में जितने प्रयास किये उतना उसके संरक्षण के विषय में नहीं सोचा। जंगल कटते गये, नदियां सूखती गई और समुद्रों की सीमायें औद्योगिक कचरे और प्रदूषण की गन्दगी से पटती चली गई। कैनाल गार्लेन्डिग की राष्ट्रीय योजना हमारी नदियों को

आज तक भी जोड़ नहीं सकी और अकेली ब्रह्मपुत्र से जितना पानी समुद्र में बिना उपयोग के बह कर चला जाता है, वह पूरे उत्तर भारत को बिजली का प्रकाश प्रदान कर सकता है। हरिद्वार से बहने वाली गंगा आज एक गंदा नाला मात्र लगती है और कानपुर में जो जूते फैक्ट्रियों का कचरा गंगा जल में आकर गिरता है, वह मीलों तक इस गंगाजल को 'गंगा गरल' बना रहा है। मेलों, त्यौहारों और पर्वो पर करोड़ो की संख्या में पवित्र नदियों में स्नान करने वाले अगणित श्रद्धालु त्वचा के रोगों से पीड़ित हो रहे हैं। मुम्बई, पणजी, हुगली तथा चेन्नई के बन्दरगाहों के आस पास तो दूर दूर तक बदबू और गन्दगी के कारण सांस लेना भी दूभर होता जा रहा है। समुद्री जीव जन्तु मर रहे हैं और महासागर की विपुल सम्पदा विलुप्त हो रही है।

स्वर्गीय राजीव गांधी ने पहली बार गंगा की सफाई की योजना बना कर एक अभियान चलाया था। इस दिशा में कुछ कार्य हुआ भी पर जैसा प्राय: सरकारी योजनाओं के साथ होता है, यह प्रयास बीच में ही रूक गया। हमने महासागर विकास विभाग तो बना दिया पर नदियों की स्वच्छता जल विभाग, कृषि विभाग, सिंचाई विभाग आदि के भरोसे छोड़ दी गई। फिर राज्य सरकारें साधनों के अभाव में अपने–अपने क्षेत्रों की नदियों, झीलों और जल स्त्रोतों का शोधन कार्य हाथ में नहीं ले सकी और प्रदूषण बढता गया। आज स्थिति यह हो गई है कि अरबों खरबों रुपये खर्च करके भी हम अपनी नदियों का अपने स्वच्छ एवं नैसर्गिक रूप में प्रवाहित होते रहने की स्थिति में नहीं ला सकते।

यद्यपि प्रदूषण एक वैश्विक प्रघटना है, किन्तु वोल्गा, हवांग्राहो, अमेजन और मिसिसिपी इतनी गन्दी और इतनी जलरहित नहीं बनी है जितनी गंगा, कावेरी गोदावरी और नर्मदा हो चुकी है। इसके अनेक कारणों में से एक कारण यह भी है कि हमारे देश का भौगोलिक धरातल हमारी नदियों के प्रवाह को धीमा बनाता है और कूड़ा करकट इकट्ठा हो जाने पर उनके प्रदूषण को बढाता है। फिर हमारी आदतें और रीति रिवाज नदियों को स्वच्छ रखने के स्थान पर उन्हें गंदा करते हैं। विकास के औद्योगिक कचरे ने इन्हें गंदे नाले बना दिये हैं और हमारा योजना आयोग इन्हें साफ करवाने में अपने को अक्षम पा रहा है।

फिर अब क्या किया जाये। पहली आवश्यकता तो यह है कि एक नदी जल राष्ट्रीय प्राधिकरण गठित किया जाये, जो देश की सारी नदियों को चार श्रेणियों में वगीकृत कर सफाई के दस वर्षीय 'टारगेट' निश्चित करें। दूसरे इन नदियों को केवल साफ ही नहीं किया जाये बल्कि इन्हें अधिक गहरा और चौड़ा बनाने का काम भी हाथ में लिया जाये। अगर हो सके तो इस कार्य को 'नरेगा योजना' से जोड़कर प्रतिवर्ष मीलों लम्बी नदियों की सफाई के कार्यक्रम बनाये जाये। तीसरे बड़ी नदियों के मुहानों पर बसे शहरों को इस कार्यक्रम से लैण्ड रिकलेयेशन द्वारा समुद्र और बन्दरगाहों की सफाई से जोड़ा जाये।

इस कार्यक्रम में निजी कार्पोरेट सैक्टर को सहभगी बनाकर जहां जहां उनके उद्योग हैं, उनसे उस नदी तथा समुद्र की सीमाओं की सफाई करवाने की जिम्मेदारी दी जाये। यह पी.पी.पी कार्यक्रम राज्य सरकारें और केन्द्रीय नदी जल अधिकरण अपने संयुक्त तत्वावधान में आरम्भ कर उसका वार्षिक मूल्यांकन करवा सकती है। जो जल स्त्रोत साफ होते जायें उन्हें एक दूसरे से जोड़ा जाये और 'कैनाल गोर्लेन्डिग' की संकल्पना को मूर्त रूप दिया जाये।

राजनीति इसमें अधिक पहल नहीं कर सकती। निजी क्षेत्र को इसमें भारी सहयोग और निवेश करना होगा। एक स्वतंत्र केन्द्रीय अधिकारण इसे निरन्तरता देते हुए धीरे धीरे एक राष्ट्रीय योजना का स्वरूप दे सकता है। नरेगा और एन.सी.सी. से जोड़कर सरकार इस परियोजना द्वारा जनसाधारण को रोजगार और युवाओं को राष्ट्रीय सेवा के अवसर प्रदान कर देश के गांवों और शहरों के आम नागरिकों को सच्चा हित साधन कर सकती है।◆

कविता

- परशुराम तोदी 'पारस'

सत्ता सोंपो श्री कृष्णा मुरारी?
ऋषि मुनियों की पवित्र भूमि पर, क्यों करती है गौवे विचारी।
सत्ताधारी मूक बने है, क्या है उनके आगे लाचारी।
यह लंक देश से जरुर हटेगा, अगर सत्ता है निर्दोष हमारी
यह सबके बस का रोग नहीं, अब सत्ता सोंपो श्री कृष्ण मुरारी।

सदाचार ही देश बचायेगा?
ऋषि मुनियों की पवित्र भूमि पर, बढ़ती जाती है मक्कारी।
आज सिसकती है मानवता, देख सत्ताधारियों की लाचारी।
कब उदित होगा भानु, और तमको दूर भगायेगा।
फूट गई तकदीर देश की, इसको कौन बचायेगा।
नैतिकता है अस्त्र हमारा, यही रामराज्य लायेगा।
अन्याय बढ़ गई देश में, अब सदाचार ही देश बचायेगा?

– 17, के.एल.वर्मन रोड,
पों.सलकिया, जिला–हवड़ा–7

ग़ज़ल

- सत्यनारायण बीजावत

जिन्दगी की राहों में मुश्किलें तो आना है
कभी हमें रोना है कभी मुस्कुराना है .....(१)
क्या हुआ जो उजड़ गए बसे हुए आशियाने
आँधी ने उजाड़े हैं जो घर फिर बसाना है .....(२)
निकल पड़े राही सफर अजाने को
चलते रहें ये कदम मंजिल को तो आना है .....(३)
कहते हैं वो आखिर चाँद औ सितारों से
सो न जाना सुनते हुए प्यार का फसाना है .....(४)
दिन भर की थकी चिड़िया सोती है बसेरे में
सूरज के निकलने से पहले उड़ के जाना है .....(५)
रात औ दिन बहती है बंध के किनारों में
क्या कश्ती का माँझी का मौजों पे ठिकाना है .....(६)
ताक में खड़े कातिल तीर औ कमान लिए
उस तरफ निगाहें हैं इस तरफ निशाना है
सहते हैं सदियों से नफरत व हिकारत को
मजलूमों लाचारों को सीने से लगाना है

– कड़क्का चौक, अजमेर

:: आओ थोड़ा हँस लें ::

पांच रुपय्ये

एक बनिया था कसूता मूंजी (कंजूस)।
एक रात अपने छोरां नै बोल्या–आज जो रोटी नहीं खावैगा, उसनै पांच रुपय्ये मिल्लैंगे।
उसके छोरे राजी हो– गे अर पांच– पांच रुपय्ये ले कै बिना रोटी खाये सो गये।
तड़कैहें (सुबह) ऊठतीं– हें बनिया नै कही– ''ईब रोटी उसनै मिल्लैंगी जो पांच रुपय्ये देगा''!

◆◆◆◆

मिठाई की दुकान

एक सेठ जी मिठाई की दुकान कर रहया था। एक ताऊ आया अर सेठ की आंखों के आगे हाथ घुमावण लाग्या।
सेठ बोल्या– चौधरी, के करै सै?
ताऊ– तन्नैं दीखै सै?
सेठ– हां, दीखै सै।
ताऊ– इतणी बढ़िया मिठाई धरी, फेर खाता क्यूं ना?
सेठ– न्यूं खाऊंगा तै मेरा नास हो ज्यागा।
ताऊ बोल्या– हट परे नै, मेरा नास होण दे, मैं खा ल्यूं सूं।

◆◆◆◆

पहले आळा कान

एक बै रब्बू नै ५०० रुपय्ये की जरूरत पड़–गी–सोची अक लाला जी पै ले ल्यूं।
रब्बू नै फोन खटकाया। लाला जी के फोन उठाते ही रब्बू बोल्या– लाला जी, मैं रब्बू बोलूं सूं।
लाला जी– हां रब्बू, बोल के बात सै?
रब्बू– लाला जो, ५०० रुपय्ये की जरूरत थी।
ईब लाला जी नै सोची अक झिकोई रुपय्ये ले ज्यागा।
लाला जी सोच कै बोल्या– 'रब्बू, मन्नैं इस कान तैं सुणै कोन्या, रिसीवर दूसरे कान पै लाऊं सूं, फेर बोलिये।'
लाला जी नै रिसीवर दूसरे कान पै लगाया अर बोल्या– हां रब्बू, ईब बोल के कह था?
ईब रब्बू नै सोची अक सुण्या कोनी, क्यूं ना हजार रुपय्ये मांग ल्यूं! सोच कै बोल्या– 'लाला जी, हजार रुपय्ये की जरूरत सै'।
लाला जी नै सोची अक झिकोई ईब घणे मांगण लाग्या।
लाला जी बोल्या– 'ऐं, रब्बू भाई, न्यूं कर– पहले आळे कान पै आ ज्या'!

◆◆◆◆

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf˙ OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)

Name : Mr./Ms. ______

Address : ______

______ City/District : ______

State : ______ Country : ______ Pin Code : ______

E-mail : ______ Mobile : ______ Landline : ______ STD CODE

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ______ dated : ______ for Rs. ______ drawn on : ______

In favour of CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED

Signature : ______ date : ______

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : **Kolkata** : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 93208 73700
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 044-4217 1320, 98416 54257 • **New Delhi** : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

हमारा सार्वजनिक जीवन

:: स्व. भंवरलाल सिंघी ::

किसी भी व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की स्थिति सदा समान नहीं रहती। उसमें भला या बुरा परिवर्तन होता ही रहता है। परिवर्तनशील सृष्टि का यह अकाट्य नियम है, जिसके अधीन संसार के सभी पदार्थ और व्यवहार हैं। यद्यपि युग को अपने अनुकूल बना लेने वाली विशिष्ट विभूतियाँ भी पैदा होती हैं और हुई है, किन्तु साधारण नियमानुसार युग के ही अनुकूल मनुष्य को बन जाना पड़ता है। बुद्धिमान व्यक्ति या समाज वह है जो या तो अपनी ताकत से युग पर अपनी ऐसी छाप डाल दे कि वह युग ही उसका हो जाय या युग की सर्वोदयी श्रेष्ठ शक्तियों के साथ अपनी ताकत को मिला कर उसकी स्वाभाविक प्रगति में योग दे। प्रगति की दौड़ में पीछे रह जाना तो किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा।

मारवाड़ी समाज ने अभी समयानुकूल प्रगति की ओर पैर उठाया ही है, जब कि अन्य जातियों और समाजों के लोग काफी आगे बढ़ चुके हैं। दिन प्रति दिन हमारी भी आंखें खुल रही हैं। हमारे सामने भी जीवन के नये आदर्श और नई कल्पनाएं अंकुरित हो रही हैं। मारवाड़ी समाज प्राचीनता का प्रेमी और स्थितिपालक अधिक रहा है। इस जड़ मनोवृत्ति ने हमारे समाज को बड़ा नुकसान पहुँचाया है। ऐसी बात नहीं है कि समाज को प्रगतिशील शक्तियों के सम्पर्क में आने का अवसर न मिला हो, पर उसने इन शक्तियों को निरर्थक समझा। द्रव्य कमाना ही उसने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य समझ कर अन्य सारे पक्षों में जीवन को पंगु बनाये रखा। न उसने स्वास्थ्य की तरफ ध्यान दिया, न शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और कला में मनोयोग दिया, और न राजनीतिक जीवन की प्रगति में उचित हिस्सा लिया, यद्यपि अर्थ की दृष्टि से तो इन सब दिशाओं में भी समाज की काफी शक्ति लगी है।

हमारी शक्ति केवल धन है। इस एक शक्ति के सहारे ही हम अपने सारे जीवन का विकास कैसे कर सकते हैं यदि हम जीना चाहते हैं, तो हमें जीवन में सर्वाङ्गपूर्णता का विकास करना होगा। मनुष्य–जीवन में सभी तरह की शक्तियों की आवश्यकता है, फिर एक शक्ति से ही कैसे काम चले। और धन की शक्ति सदा समान भी तो नहीं रहती। उनकी जो ताकत आज से पचास वर्ष पूर्व थी, वह आज वैसी ही नहीं है। मैं तो उन लोगों में से हूँ जो मानते है कि संसार में शीघ्र ही बड़ी उथल–पुथल होने वाली है। मैं देखता हूँ कि हमारे विचारों में अन्दर ही अन्दर एक क्रांति पैदा होने लगी है। मारवाड़ी समाज को यह स्पष्ट रुप से समझ लेना चाहिये कि अब जो जमाना आने वाला है, उसमें पुराने ख्यालों से काम नहीं चलेगा। जीवन में हर दिशा में, हर तरफ क्रान्ति आ रही है–जनमत बदल रहा है, सम्मान और प्रतिष्ठा का प्रतिमान बदल रहा है। चन्दे की बड़ी–बड़ी रकमें देकर भी हम सामाजिक जीवन में रही कमी की पूर्ति नहीं कर सकते।

आज चन्दा मांगते समय लोग अपने मतलब से चाहे मारवाड़ी समाज की प्रशंसा के गीत गाते रहें किन्तु हमसे असलियत छिपी नहीं है। दूसरे लोगों के द्वारा मारवाड़ी समाज एक बलहीन, संस्कृतिहीन, अशिक्षित और स्वार्थी समाज समझा जाता है। इन सब करणों से हमारा समाज डरपोक, दब्बू, और पिछड़ा हुआ भी माना जाता है। वर्तमान युद्ध (दूसरा विश्व युद्ध) की संकटापन्न स्थिति का सबसे अधिक आतंक मारवाड़ी समाज पर देखा जाता है। लोगों में तरह–तरह की अफवाहों से घबराहट और आतंक फैल रहा है, मानो संकट की सारी परिस्थिति का असर केवल उन्हीं पर पड़ने वाला है। जरा सी दंगे–फसाद की बात होती है तो समाज में भगदड़ हो जाती है। इस प्रकार की पस्त–हिम्मती, बुज़दिली और निर्जीवता को दूर किये बिना हमें समाज का भविष्य बड़ा खतरे में मालूम होता है। समाज का यह चित्र हम सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के सामने सदा उपस्थिति रहता है। हम चाहते हैं कि इस चित्र को बदल दें–समाज में एक नवीन जीवन डाल दें। पर यह चित्र बदल देना, मारवाड़ी समाज की काया पलट कर देना–कोई सरल बात नहीं है। इसके लिये हमें गम्भीरता–पूर्वक आत्मोत्सर्ग की भावना के साथ काम करने की जरुरत है। पर हमें तो दोनों तरफ कठिनाई है–एक ओर इतना बड़ा कार्य और दूसरी ओर साधनों की इतनी नगण्य संख्या। ऐसी अवस्था में हमारा कोई भी कार्य पूरी तरह सफल हो, इसके लिये समाज में सार्वजनिक जीवन का विकास करना सबसे पहली आवश्यकता है। व्यक्तिगत स्वार्थ थोड़े या बहुत सभी एक होते हैं, सभी उनके लिये काम भी करते हैं, पर यदि सब की ताकत उन्हीं तक सीमित रह कर खत्म हो जाय तो फिर समाज के पास सुधार एवं विकास का कोई साधन नहीं है। समाज में सच्चे, निस्पृही, दृढ़निश्चयी और

अखण्ड सेवा–वृत्तिवाले कार्यकर्त्ता नहीं है या नहीं पैदा होते तो फिर किसी की ताकत नहीं है कि समाज को बचा सके। यह किसे नहीं मालूम कि समाज में कार्यकर्त्ताओं की बड़ी कमी है। कलकत्ता का ही हमारा अनुभव है कि जैसे–तैसे भी कार्यकर्त्ताओं की जो एक संख्या है, उस पर ही विभिन्न संस्थाओं और विभिन्न कामों का बोझा हमेशा लदा रहता है। कितनी भी सेवा–भावना, निस्पृहता और कष्ट–सहन की ताकत हो आखिर मनुष्य की शक्ति की एक सीमा तो है ही। उसके बाहर वह जा ही नहीं सकता। और उस सीमा तक भी भरपूर समय और शक्ति लगा देने वाले कार्यकर्त्ता कितने है फिर हरएक व्यक्ति सच्ची दिली भावना से काम करने वाला नहीं होता। सार्वजनिक जीवन में व्यक्ति कितनी ही बातों की प्रेरणा से प्रवेश कर सकता है। पर हमें उससे कोई मतलब नहीं। इतनी गहरी कसौटी तक यदि हम उतरेंगे तो सम्भव है कि बड़ी निराशा हो। इसलिये समाज को जो भी कार्यकर्त्ता मिलें, उन्हीं से सन्तोष करना पड़ेगा। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ ज्यों–ज्यों बदल रही हैं, हमारा समाज भी उनसे अधिकाधिक प्रभावित होता जा रहा है और हम सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं की जिम्मेदारी और अधिक होती जाती है। एक–एक कार्यकर्त्ता के पास ३–४ कार्य एक साथ रहते हैं–ऐसे काम जिनमें से एक भी मामूली नहीं। वह कार्यकर्त्ता यदि उनमें से एक काम को भी पूरी तरह जैसा होना चाहिये वैसा करे तो कहा नहीं जा सकता कि अपने आपको उसमें खपा कर भी वह उसे पूरा कर लेगा या नहीं ऐसी हालत में तीन–तीन चार–चार कार्यो का बोझ एक साथ, पर यहाँ तो कहावत प्रसिद्ध हो गई हैं कि जो चार काम कर सकता है, वह छह भी कर सकता है। किसी अंश तक यह बात शायद ठीक भी है। परन्तु समाज को इस बात पर क्यों नहीं विचार करना चाहिये कि सार्वजनिक जीवन का विकास कर यथेष्ठ मात्रा में कार्यकर्ता पैदा किये जायें।

इस प्रश्न पर जब हम विचार करते है तो हमें वे त्रुटियाँ नजर आती है जिनके कारण सार्वजनिक व्यक्तियों का इतना अभाव है। सबसे पहली बात तो हमारे यहाँ काम–धन्धों के समय और तरीके की है। दुकानों और आफिसों में व्यवसाय या नौकरी करने वालों के काम करने का समय और तरीका ऐसा है कि उसमें साधारण तौर से सार्वजनिक कार्य के लिये कोई समय मिलता नहीं। हमारे एक व्यवसायी जब एक पुस्तकालय खोलते हैं तो उन्हें इस बात की तो प्रसन्नता होती है कि उन्होंने एक सद्काम में पैसा लगाया और ज्ञान–वृद्धि का एक साधन खड़ा किया है, किन्तु समाज को उससे कितना फायदा मिलता है और कैसे मिलता है, इसका उन्हें कोई ध्यान नहीं रहता। उन्हीं सज्जन की गद्दी में लोगों की सुबह से शाम तक हर दिन बिना किसी नियमित छुट्टी के काम में इस तरह जुटे रहना पड़ता है कि बेचारों को पुस्तकालय में जाकर पुस्तक या समाचार–पत्र पढ़ने का न समय मिलता है और न उस थकावट के बाद मन में स्फूर्ति ही रहती है। व्यवसायी महोदय जब वर्ष के आखिर में पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव पर विवरण पेश करते है तो खेद प्रकट करते हैं कि समाज के भाइयों ने पुस्तकालय से लाभ बहुत कम उठाया।

इस प्रकार सार्वजनिक जीवन का विकास करने के जो साधन है, उनका समाज में पूरा उपयोग नहीं हो पाता। तब फिर हम कैसे आशा करें कि सार्वजनिक व्यक्ति पैदा होंगे। यह दूसरी बात है कि ऐसे वातावरण में भी कुछ लोग तो निकल ही आते हैं। पेट भरने के धन्धे से कुछ भी फुर्सत न हो तो फिर सार्वजनिक जीवन कैसे पनपे जब एक युवक बराबर सार्वजनिक व्यक्तियों और संस्थाओं के सम्पर्क में आता रहे, वैसी भावना पैदा करने वाला साहित्य पढ़ता रहे तो हम आशा कर सकते हैं कि वह कभी सार्वजनिक सेवक बन सकेगा, पर यदि हम पेट की समस्या के हल में ही उसे काम–धन्धे के तरीके और समय के कारण बाँध देते हैं तो वह गाड़ी के बैल की तरह उसी में रस लेने लग जाता है और सार्वजनिक सेवा की तरफ चाहने पर भी उसका रूझान नहीं हो सकता। बड़े–बड़े व्यवसायियों से बातें करने पर हमें उनमें समाज की मनोदशा पर यह चिन्ता मालूम पड़ती है कि समाज में सार्वजनिक कार्यकर्त्ता नहीं हैं, पर न उन्हें फुर्सत है, और न उनके कर्मचारियों को छुट्टी है। तब सार्वजनिक सेवा की संस्थाएं चला कर समाज का कितना और क्या भला हो सकता है यह तो हुई वातावरण की बात। लगभग नब्बे फीसदी मारवाड़ी इसी वातावरण में खाते, कमाते और जीते हैं। इसमें परिवर्तन किये बिना सार्वजनिक सेवक कैसे पैदा हो। अपने और अपने कुटुम्ब के भरण–पोषण की आवश्यकता तो कार्यकर्त्ताओं को भी होती है। यदि सार्वजनिक सेवा के कामों में समय लगाने में उनकी बाधा होती है, तो कब तक वे उसे करते रह सकेंगे। दूसरी बात है समाज की मनोवृत्ति की। अधिकतर सार्वजनिक कार्यकर्त्ता साधारण श्रेणी के हैं। उन्हें अपमान, उपेक्षा और तुच्छत्व का कटु अनुभव होता है। जो सार्वजनिक क्षेत्र में आ गये हैं और जिनके विचार इतने दृढ़ हो चुके हैं कि उनको इन बातों की परवाह नहीं है, उनके लिये ये बातें कुछ भी नहीं लेकिन अगर समाज की मनोवृत्ति सार्वजनिक सेवकों की ओर उपेक्षा और अनादर की रहे, तो इससे बड़ा समाज का और कोई दुर्भाग्य नहीं हो सकता।◆

मारवाड़ी समाज अपनी चिन्तनधारा बदले

:: स्व. ईश्वरदास जालान ::

जिस समाज में मनुष्य का जन्म होता है, उसके साथ ममत्व होना स्वाभाविक है। समाज के भविष्य के साथ उस समाज में रहनेवाले , प्रत्येक व्यक्ति का भविष्य भी जड़ित रहता है। यदि उस समाज की स्थिति किसी कारण से चिन्तनीय दिखने लगे तो उस समाज के व्यक्ति के भी मन में अशान्ति का होना स्वाभाविक है। मैं ८० वर्ष की उम्र में पहुँच गया हूँ और लगभग ६५ वर्ष से इस समाज के सार्वजनिक जीवन में भाग लेता रहा हूँ। जब मैं राजनैतिक क्षेत्र में था उस समय भी इस समाज के सार्वजनिक जीवन से उतना ही घनिष्ट संबंध बना रहा, जितना कि देश के सार्वजनिक जीवन से। लगभग ३० वर्षों तक तो बंगाल की विधान सभा में सदस्य रहा, जिसमें ५ वर्ष विधान सभा के स्पीकर के पद पर और १५ वर्ष मंत्रिमण्डल के सदस्य के रुप में बिताया। जितनी दिलचस्पी मुझे राजनीति में रही, उतनी ही दिलचस्पी समाजोत्थान के कार्यों में भी रही । अतएव यदि मैं इस समाज के संबंध में कुछ लिखूँ तो संभवत: अनधिकार चर्चा नहीं समझी जायेगी। कभी–कभी स्पष्ट बोलने की आवश्यकता हो जाती है, चाहे वह प्रिय मनोहारी न भी हो। इसलिए यदि कोई बात मुझ से अप्रिय भी लिखी जाये तो हमारे बन्धु हमें क्षमा करेंगे।

हमारे पूर्वजों की उपलब्धियाँ : पिछले दो–तीन सौ वर्षों के अन्दर मारवाड़ी समाज अपनी जन्मभूमि राजस्थान के कठोर जीवन को छोड़कर अनेक दुखों को साहसपूर्वक झेलता हुआ अदम्य उत्साह और आत्मविश्वास का आश्रय लेकर समस्त भारतवर्ष में फैल गया। कोई भी मनुष्य कुछ वर्षों पूर्व तक यदि राजस्थान जाता तो बड़ी–बड़ी हवेलियां और अट्टालिकाएं तालों से बन्द देखने में आती थीं। इधर १०–१५ वर्षों में अवश्य राजस्थान में भी बड़ी उन्नति हो गयी है और स्वतंत्रता के पहले जिसने राजस्थान को देखा होगा, अब उसे वहां के वैभव को देखकर अवश्य आश्चर्य होगा। परन्तु स्वतंत्रता के पूर्व राजस्थान वास्तविक मरुभूमि था।

जिन प्रदेशों में जिन्दगी आराम से बसर होती थी, वे लोग घरों से बाहर नहीं निकले और उनकी प्रगति भी नहीं हो सकी। कष्टमय जीवन मनुष्य को परिस्थितियों से युद्ध करने की क्षमता प्रदान करता है। उसी क्षमता को लेकर मारवाड़ी समाज ने भारत के विभिन्न प्रदेशों में ही नहीं बल्कि बर्मा तक भी प्रवेश किया। घोर परिश्रम करने से नहीं चूके। जीवन में वैभव हो जाने पर भी सादगी रही। दान–पुण्य–धर्म में भी आस्था बनी रही, जिसका प्रमाण आज सारा भारतवर्ष है। उनमें शिक्षा नहीं थी, अतएव व्यवसाय, वाणिज्य में उन्हें आना पड़ा और उसी के द्वारा उन्हें अपनी जीविका उपार्जन करनी पड़ी। जिनमें अंग्रेजी शिक्षा आ गयी, वे सरकारी अफीसर, वकील, डाक्टर, इंजीनियर इत्यादि पेशों में चले गये। व्यवसाय, वाणिज्य में जो धन की प्राप्ति हो सकती है, वह और किसी भी व्यवसाय में नहीं प्राप्त होती। धीरे–धीरे मारवाड़ी समाज अत्यन्त वैभवशाली समाज के रुप में प्रकट हुआ। अन्य जातियां जो शिक्षा के कारण सम्माननीय पेशों में या राजकीय पदों पर गयीं, वे इतना वैभव नहीं प्राप्त कर सकीं और आज मारवाड़ी समाज उनकी ईर्ष्या और द्वेष का शिकार हो रहा है–परन्तु यह भावना बिल्कुल निराधार है। नीति का वचन है कि

को वीरस्य मनस्विन स्वविषय को वा विदेशस्विमृत
य देशम् वसते तमेव कुरुते बाहु प्रतापादित

अर्थात् वीरों एवं मनस्वियों के लिए कौन अपना देश है और कौन पराया, वे जहां गये, वहीं अपने बाहुबल से अधिकार कर लेते हैं। भारतवर्ष के भविष्य के निर्माण में इनका बहुत बड़ा हाथ हो सकता है। आज तो इस समाज में शिक्षा का भी इतना विस्तार हो गया है कि किसी भी दूसरे समाज से यह पीछे नहीं है। सामाजिक सुधारों के लिए भी जितने आन्दोलन इस समाज में हुए हैं, शायद ही किसी दूसरे समाज में हुए होंगे। स्त्री समाज की अवस्था जो हमलोगों ने अपने बाल्यकाल में देखी है, उससे वह इतनी अधिक बदल गयी है जिसे विश्वास करना मुश्किल है। जो समाज अपनी जन्मभूमि छोड़कर बाहर निकल जाता है, उसमें द्रुतगति से परिवर्तन होने की शक्ति आ जाती है। इतना होते हुए भी जिन–जिन प्रान्तों में यह समाज गया है और सदियों से बस रहा है, तो भी उसकी पृथक इकाई वर्त्तमान है। वेश, भूषा, रहन–सहन, विचारधारा अन्य प्रान्तवासियों से भिन्न रह गये हैं, और वे उन स्थानों में विलीन नहीं हो सके। यही कारण हैं, जो हमें इस समाज का भविष्य क्या हो, सोचने के लिए बाध्य करते हैं।

जातिवादिता, प्रान्तीयता एवं साम्प्रदायिकता : इस देश में जातिवाद, प्रान्तीयता और साम्प्रदायिकता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इसके विरुद्ध एक जमाने से विरोधी आवाज सुनाई दे रही है, परन्तु मर्ज बढ़ता गया

ज्यों–ज्यों दवा की वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। जब हमलोग बच्चे थे, उस समय छुआछूत का रोग तो अवश्य बड़े पैमाने पर था, परन्तु पारस्परिक विरोध और वैरभाव इतना नहीं था। अब छुआछूत तो बहुत कम बच गया है, परन्तु पारस्परिक विरोध बहुत अधिक बढ़ गया है और उसके घटने का कोई लक्षण नहीं नजर आ रहा है।

पहले एक प्रान्त के निवासी दूसरे प्रान्तों में जाकर रहते थे, अपनी जीविका चलाते थे, अपनी भाषा बोलते थे। रहन–सहन भिन्न था। लेकिन पारस्परिक विरोध किसी प्रकार का नजर नहीं आता था।जातियाँ भी सभी मौजूद थीं, जिनमें आपस में खानपान, विवाह–शादी नहीं होती थी, तो भी कोई शत्रुता हो, ऐसी बात नहीं थी। जैसे–जैसे शिक्षा बढ़ी, स्वार्थ बढ़ा, आर्थिक दृष्टिकोण आया, वैसे–वैसे सब प्रकार के विरोध उत्पन्न हो गये। हमारे विदेशी शासक अंग्रेज थे। इन्होंने अपनी सत्ता भारत में कायम रखने के लिए पारस्परिक भेद–भाव को उत्पन्न करने में कोई कसर उठा नहीं रखी। इन सबका परिणाम आज यह हुआ है कि प्रत्येक प्रान्त में दूसरे प्रान्त से आये हुए मनुष्यों के विरुद्ध में भावना गहरी होती जा रही है। कभी आसामी–बंगाली, कभी आसामी–मारवाड़ी, कभी बंगाली–मारवाड़ी तो कभी हिन्दू–मुसलमानों में उपद्रवों के समाचार मिलते ही रहते हैं। आज मारवाड़ी समाज की समृद्धि वहाँ के निवासियों के लिए असह्य हो रही है। यहाँ तक कि जो परिवार बंगाल में दो–तीन सौ वर्षो से बसे हुए हैं, वे भी समय–समय पर इस ईर्ष्या–द्वेष के शिकार हो जाते हैं।

द्वितीय महायुद्ध के बाद समाज का स्वरुप : द्वितीय महायुद्ध के बाद और विशेष कर स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद देश में व्यापार, वाणिज्य और उद्योग–धन्धों में इतनी वृद्धि हुई है और उसमें लोगों ने इतना अधिक उपार्जन किया है कि समाज की चिंतनधारा बिल्कुल बदल गयी है और जीवन का एकमात्र लक्ष्य येनकेन प्रकारेण धनोपार्जन करना ही रह गया है। जब ऐसी स्थिति हो जाती है, तो मनुष्य की चिंतनधारा ही बदल जाती है और वह सोते–जागते, उठते–बैठते केवल धन की आकांक्षा करता रहता है और वही जीवन का सर्वस्व बन जाता है।

धन के दो रुप होते हैं–एक सौम्य और दूसरा विकृत। इसलिए जहाँ हमारे शास्त्रों में धन की प्रशंसा की गयी है, वहीं उसकी घोर निन्दा भी की गयी है। जब धन का विकृत रुप हो जाता है, तो प्रमाद बढ़ जाता है– अभिमान आ जाता है। मारवाड़ी समाज में यही हुआ है और आज यह स्थिति हो गयी है कि मारवाड़ी समाज के व्यक्ति अपने को मारवाड़ी कहने में संकोच अनुभव करते हैं और यह शुद्ध घृणा के रुप में परिणत हो गया है, सारी चिंतनधारा में जबतक परिवर्तन नहीं आयेगा, तबतक हम अपने गौरव और सम्मान को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। जिस प्रकार हम धनोपार्जन करते है और जिस तरीके से हम उसको प्रमाद और अनैतिक कार्यो में अपव्यय करते हैं, उससे हम कभी भी दूसरे समाजों का सम्मान प्राप्त नहीं कर सकते। दान देते हैं– यह अच्छी बात है और कुछ अंश तक वह हमें सम्मान भी देता है,परन्तु जब तक हम धनोपार्जन की विधि में परिवर्त्तन नहीं लाते और उसके अपव्यय को नहीं रोकते, तबतक केवल दान हमारी रक्षा में समर्थ नहीं हो सकता।

वैयक्तिक अनीतियाँ : हमने सुना है कि समाज के धनी वर्गो में ९० प्रतिशत नौजवान कम या अधिक शराब पीने लगे हैं, जहाँ पुराने जमाने में कोई बिरला ही आदमी ऐसा करता था। मुर्ग–मुसल्लम और अन्य मांसादि खानेवाले युवकों की संख्या भी बहुत बढ़ गयी है। अमेरिका के हिप्पियों की नकल करके गांजा, चरस आदि भी अपना घर बना रहा है। स्त्री–पुरुष के जो पवित्र संबन्ध थे, वे आज रसातल की ओर जा रहे हैं।

व्यापारिक दुर्नीतियाँ : व्यापारिक क्षेत्र में जो दुर्नीतियाँ प्रवेश कर गयी हैं, उनकी चर्चा करना ही व्यर्थ है। आज कोई वस्तु नहीं, जो शुद्ध मिलती हो–हर चीज में मिलावट हो गयी है। दवाइयों में भी इतनी मिलावट बढ़ गयी है कि इसके कारण मनुष्य अपने जीवन से हाथ धो बैठता है। आये दिन हम अखबारों में पढ़ते हैं कि मिलावटी शराब के कारण एक–एक साथ २०,३०,५० मनुष्यों की मृत्यु तक हो जाती है–नफा करने की कोई सीमा नहीं रही। सरकार के सारे प्रयत्न विफल हुए हैं। रोज हर चीज के दाम इतने बढ़ते जा रहे हैं कि मध्यवित्त गृहस्थ के लिए जीवन–यापन करना असंभव हो गया है।

सामाजिक व्यवस्था : यह इतनी बिगड़ती जा रही है कि कन्या का विवाह करना एक मध्यवित्त मनुष्य के लिए असंभव हो गया है। मनुष्य मनुष्य नहीं रह गया है। वह जड़ हो गया है। यह अवस्था कब तक चलेगी, कहां तक इस नैतिक अधोपतन का वर्णन किया जाय। मनुष्य

एक यंत्र बन गया है, जिसे अपने सिवाय दूसरे किसी के सुख–दुख से कोई मतलब नहीं। इसीलिए हम कहने को बाध्य हैं कि जो कुछ हो रहा है, वह कटु सत्य है। जबतक समाज अपनी चिंतनधारा को न बदले, जबतक वह अपने स्वरुप का परिवर्तन न करे, तब तक उसके भविष्य को कैसे आशाप्रद कहा जाय।

देश का नेतृत्व : देश के जीवन में मारवाड़ी समाज का इतना महत्वपूर्ण स्थान है कि अगर वह अपनी बुराइयों को सर्वथा दूर न भी कर सके, परन्तु यदि उसे नियंत्रण में ला सके, चाहे वह वैयक्तिक बुराई हो या व्यापार संबंधी या सामाजिक कार्य संबंधी हो और अगर वह जरुरत से अधिक अपने धन और सम्पत्ति को देश के गरीबों के उत्थान में लगा सके और देश की आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में सहायक बन सके, तो यह समाज न केवल जनता का आदर और सम्मान ही प्राप्त कर सकता है, बल्कि देश का नेतृत्व ग्रहण कर सकता है और देश के इतिहास में अपनी कीर्ति को चिरस्थायी बना सकता है।

भामाशाह ने यदि राणा प्रताप को उनकी विपत्तियों में सहायता नहीं पहुँचाई होती,तो भामाशाह का नाम आज कौन याद करता? हजारों ही अमीर आये और चले गये, किन्तु भामाशाह को आज भी हम याद करते हैं। मारवाड़ी समाज अपनी शक्ति और स्वरुप को पहचाने और उसके अनुसार कार्य करें तभी इस समाज का जीवन धन्य हो सकता है।◆

समीक्षा :

कैकेयी के चरित्र के साथ न्याय की कोशिश

हिन्दू धर्म के महान ग्रन्थ रामायण के अन्यतम पात्र कैकेयी के चरित्र को समझने की कभी कोई गंभीर कोशिश नहीं हुई, यह बहुत ही अफसोस की बात है। कैकयी को केवल इसलिए जाना जाता रहा है कि उसने आदर्श पुरूष श्री राम के लिए वनवास और अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी माँगी। सहस्त्रों वर्षों के उपरान्त आज भी कैकेयी को महाभारत के शकुनि के साथ ''विलेन ऑफ द पीस'' के रूप में कटघरे में खड़ा किया जाता है। सच कहें तो कैकेयी की नियति शकुनि से भी बदतर रही है। हिन्दी एवं राजस्थानी के प्रखर साहित्यकार श्री सीताराम महर्षि ने अपनी नवीनतम रचना कैकेयी के माध्यम से इस चरित्र के प्रति प्रबुद्धजनों की विचार शून्यता को भंग करने की कोशिश की है। इसे सार्थक कोशिश के रूप में स्वीकार करना पड़ता है।

आत्म–कथ्यात्मक शैली में लिखे गये इस उपन्यास में कैकेयी के अंतर्द्वन्द्व का बेहद समीण वर्णन हुआ है और समय की पड़ताल करते हुए यह समझने की कोशिश की गयी है कि कैकेयी के स्वार्थपूर्ण कृत्य की पृष्ठभूमि क्या थी? इसमें कैकेयी स्वयं वक्ता के रूप में बेहद तटस्थ भाव से सभी मुख्य घटनाओं का वर्णन व विश्लेषण करती है और किसी भी निष्कर्ष तक पहुँचने की जिम्मेवारी समभाव से पाठकों के ऊपर छोड़ देती है। पृष्ठ ११ में कैकेयी स्वयं कहती हैं मैं नहीं कहती कि आप मेरी आत्मकथा पढ़कर उन सब ग्रन्थों की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह लगायें, जिनका आपने अब तक अध्ययन किया है। मेरा तो आपसे यही आग्रह है कि आप इस बात पर विचार करें कि क्या मेरे साथ सर्वथा न्याय किया गया है?

लेखनी की वैचारिक तटस्था कैकेयी की गरिमा प्रदान करती है और लेखक की गहरी कल्पना शक्ति उपन्यास को रोचक बनाते हुए पाठक को प्रथम पृष्ठ से अंतिम पृष्ठ तक बांधे रखती है। लेखक ने कैकेयी की रचना बाल्मीकि रामायण के कुछ श्लोकों के निष्कर्ष के आधार पर की है।

लेखक श्री सीताराम महर्षि का यह उपन्यास हिन्दी–साहित्य को उनकी अनुपम देन है। पाठक निश्चित रूप से कैकेयी के बारे में गम्भीरता से विचार करने की दिशा में अग्रसर होंगे।

पुस्तक का मुद्रण व आवरण सज्जा भी निसंदेह प्रशंसनीय है। पुस्तक का प्रकाशन शिव प्रसाद मोहनलाल चौरिटीबल ट्रस्ट, गुवाहाटी द्वारा किया गया है। पुस्तक प्रज्ञा प्रकाशन, कृष्ण–कुटीर, रतनगढ़–३३१०२२ से प्राप्त की जा सकती है। २२४ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य २०० रुपये रखा गया है।◆

– साभार : कैकेयी

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- PG Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms.
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन व सीकर नागरिक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में

शिक्षा महाकोष की स्थापना हो - रूँगटा

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन व सीकर नागरिक परिषद के संयुक्त तत्वावधान में की ओर से २० जून २०१० को राज्य के आइसीएसई, आइएससी, सीबीएसइ व माध्यमिक की १०वीं व १२वीं की परीक्षा में बेहतर अंक पानेवाले छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया, महाजाति सदन एनेक्सी हॉल में आयोजित समारोह में संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रुंगटा ने आर्थिक रुप से कमजोर मेधावी छात्रों के लिए शिक्षा महाकोष बनाने का सुझाव दिया। प्रधान अतिथि बनवारीलाल मित्तल ने कहा कि पढ़ाई के साथ–साथ बच्चों को संगीत, नृत्य सहित अन्य क्षेत्रों में प्रोत्साहित करना चाहिए। सीकर नागरिक परिषद के अध्यक्ष घनश्याम प्रसाद सोभासरिया ने कहा कि मेधावी व जरुरतमंद बच्चों को प्रोत्साहित करना कर्तव्य है। इस मौके पर राजेश बजाज, राजेश अग्रवाल, संपतमल बच्छावत ने भी अपने विचार रखें।सम्मेलन के अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इन मेधावी छात्रों पर समाज को गर्व है। विद्यार्थियों का सम्मान उनके लिये प्रेरणादायक सिद्ध हो सकता है। सचिव रामगोपाल बागला ने कहा ६९ वर्षो से संस्था समर्पित भाव से समाज सेवा कर रही है। उन्होंने गरीब कन्याओं की शादियां कराने की घोषणा की निर्धन छात्र–छात्राओं को स्कूली फीस व पुस्तक सम्मेलन की ओर से दिया जा रहा है। निर्णायक कमेटी के संयोजक श्री विष्णु

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा दीप प्रज्जवलित कर समारोह का उद्घाटन करते हुए।

छात्र–छात्राओं के अभिभावकों को पुरस्कार देते हुए श्री रुँगटाजी

छात्र–छात्राओं के अभिभावकों को पुरस्कार देते हुए श्री बनवारीलाल मित्तल

श्री घनश्याम सोभासरिया एक छात्रा का पुरस्कृत करते हुए

प.बं.मा.स. के अध्यक्ष श्री गुजरवासिया एक छात्र को पुरस्कृत करते हुए।

प्रकाश बागला ने सम्मानित किये जाने वाले छात्रों का रिपोर्ट प्रस्तुत किया। समारोह में महानगर के बिड़ला हाईस्कूल, महादेवी बिड़ला स्कूल, डानबास्को, दिगम्बर जैन, नोपानी विद्यालय, दी हैरिटेज स्कूल, दिल्ली पब्लिक स्कूल, सेंट हैलेन स्कूल, कोलकाता पब्लिक स्कूल जैसे करीब ५० स्कूलों के ६८ होनहार छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया जिसमें २७ छात्र–छात्राओं को टोपर का सम्मान स्वरुप प्रमाण पत्र, स्मृतिचिन्ह व घड़ी दी गयी व बाकी छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहन पुरस्कार के रुप में स्मृतिचिन्ह, प्रमाणपत्र व पेन देकर सभी छात्र–छात्राओं का हौसला बढ़ाया। संयोजक श्री दामोदर प्रसाद विदावतका के धन्यवाद देने के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में राधाकिशन सफड़, सुधीर बागल, राजकुमार केडिया, विष्णु मित्तल, राजकुमार अग्रवाल, जुगल जाजोदिया, नारायण अग्रवाल आदि उपस्थित थे।◆

मैं मैं हूँ

– विजया शर्मा

मैंने शीत से बचने को
सर पर चादर रखी
लोगों ने समझा
लड़की संस्कारी है
मैंने श्रद्धा से सर झुकाया
लोगों ने समझा
आज्ञाकारी है
मैंने धरती को नमन करके नैन झुकाए
लोगों ने समझा
लड़की शर्माती है
मैंने आकाश की तरफ देखा
लोगों ने समझा
अवारा है
मैंने अधिकार के लिए मुँह खोला
लोगों ने समझा उद्दंड है
मैंने प्यार से देखा
लोगों ने समझा व्यभिचारी है
आँखों से आँसू गिरे
लोगों ने समझा बेचारी है
मैंने कलम उठाई
लोगों ने समझा गुनाह है
मैंने अंधेरे से बचने को दिया जलाया
लोगों ने समझा आग है
कहाँ समझा किसी ने
मैं मैं हूँ।

– 1, रुपचन्द्र राय स्ट्रीट,
कोलकाता–700007
मो.–9231699276

ग़ज़ल

– नरेश हमिलपुरकर

क्यों इतना फक्र ''औ गुरुर'' है, नाज़ है
न तू शहनशाह है, न तेरा ताज है
बेबस, बेहाल, टूटा–रुठा हुआ आदमी
कमजोर हाथों से दूर रोटी–अनाज है
दुनिया बदल गयी मगर गरीबी नहीं
निर्बल–निर्धन की सुनता कौन आवाज़ है
शिकायत समाज से है, न सरकार से
खुद से शर्मसार, मुकद्दर से नाराज़ है
अपनों से भी वही सलूक, वही अंदाज़
सबकी वही चाल चलन, वही मिजाज़ है
बहानेबाज–चालबाज दुनिया भर हैं
मगर अफसोस के ये भी दगाबाज़ है
मुहब्बत बुत, नफरत पत्थर सा
आदमी बूंद भर, सागर सा समाज है
ये कौन सा न्याय, ये कैसा इन्साफ है
किसान परेशान, मजदूर मोहताज है

मुझसे बहतर ग़ज़लगो कल होंगे
कैद ग़ज़लों में अल्फाज हर पल होंगे
ग़ज़ल हर दिल से कल भी गुजरेगी
जुदा शायरों की जुबां, जहन, दिल होंगे
जज्बा ये ग़ज़ल की खत्म नहीं होगी
ग़ज़ल वही रहेगी, शायर अदल–बदल होंगे
ग़ज़लगो हिन्दुस्तान के जो भी होंगे
हिमालय होंगे, गंगा जमुना का जल होंगे
सब्र और इन्तेजार, हौसले–हिम्मत सदा
हर परेशानी, मुश्किलों के हल होंगे
कुशल–चपल लोग ही सफल होंगे
जो बोया वही फसल, वही फल होंगे
कम ही ऐसी जगह हैं जहाँ में 'नरेश'
किसी दलदल में खिले कमल होंगे

संपादक ''राष्ट्रीय बुलेटिन''
बिटगुप्पा–585412 (कर्नाटक)
मोबाईल–09342904168/09379273765

युगपथ चरण :

राजस्थान परिषद ने मनाया 471वां प्रताप जयन्ती समारोह

कोलकाता की सुप्रसिद्ध सामाजिक, सांस्कृतिक संस्था राजस्थान परिषद ने प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ४७१वां प्रताप जयन्ती समारोह बंगाल चेम्बर के सभाकक्ष में राजस्थानी मूल के पश्चिम बंगाल के युवा विधायक श्री दिनेश बजाज की अध्यक्षता में मनाया। श्री बजाज ने राजस्थान परिषद को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इसके प्रयत्न से कोलकाता महानगर में प्रातःस्मरणीय महाराणा प्रताप की स्मृति में विगत ६ वर्षों में तीन बड़े कार्य सम्पादित हुए हैं।

प्रधान अतिथि के रूप में पधारी सिलीगुड़ी नगरनिगम की चेयरमेन श्रीमती सविता अग्रवाल ने कहा कि प्रताप हमारे लिए देशभक्ति के अजस्त्र स्त्रोत हैं। सम्माननीय अतिथि एवं 'सन्मार्ग' दैनिक के प्रधान सम्पादक श्री विवेक गुप्ता ने कहा कि प्रताप को याद करना ही पुण्य कार्य है। उनकी वीरता, उदारता एवं प्रशासनिक दक्षता सभी सदियों तक अनुकरणीय बनी रहेगी। उन्होंने परिषद के कार्यों की भी सराहना की। प्रधान वक्ता श्री रतन शाह ने प्रताप के जीवन के विभिन्न पक्षों कर प्रकाश डालते हुए कहा कि व्यक्तित्व के निर्माण में स्थान विशेष की भौगोलिक स्थिति एवं भाषा परम्परा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। परिषद के अध्यक्ष श्री शार्दुल सिंह जैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि महाकवि श्री कन्हैयालाल सेठिया जी इसके प्रेरणा स्त्रोत थे। परिषद के उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने प्रतापसिंह के संग्रामों एवं विविध पक्षों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सोलहवीं शताब्दी में यदि प्रताप झुक जाते तो भारत का इतिहास सदा के लिए कलंकित हो जाता। प्रताप ने अत्यन्त विकट, विपरीत स्थितियों में भी स्वतंत्रता एवं धर्मरक्षा के लिए अद्‌भुत संग्राम कर आने वाली पीढ़ियों को सिर उठाकर खड़े रहने का मार्ग प्रशस्त किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद के अर्थमंत्री रुगलाल सुराणा (जैन) ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन महामंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने किया।◆

'शिक्षा गौरव' सम्मान से सम्मानित हुए मेधावी छात्र

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने समाज के मेधावी छात्रों को 'शिक्षा गौरव' सम्मान से सम्मानित किया। मानव संसाधन विकास मंत्री हरि नारायण सिंह ने बेहतर करने के लिए छात्रों को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना किए। उन्होंने छात्रों को प्रतीक चिन्ह भेंट किया। प्रतिभा सम्मान समारोह में आई आई टी टॉपर समीर अग्रवाल, बारहवीं विज्ञान में प्रथम श्वेता रजनी, लोकेश अग्रवाल, हर्षल बिदासरिया, स्मृति कारीवाल, अपूर्व गोयल, अभिषेक गर्ग, हर्षिता बिदासरिया एवं मोहित अग्रवाल सम्मानित हुए। इसके अतिरिक्त १२५ प्रतिभावान छात्रों को सम्मानित करते हुए प्रमाण पत्र एवं सम्मान चिन्ह दिया गया। सम्मेलन के प्रादेशिक अध्यक्ष कमल नोपानी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम का संचालन संयोजक अंजनी सुरेका ने किया। मीडिया प्रभारी पुष्करलाल अग्रवाल ने कहा कि गत वर्ष प्रतिभा सम्मान समारोह प्रमंडलीय स्तर पर किया गया था। इस बार यह राज्य स्तर पर किया गया। सम्मान समारोह में प्रदेशिक महामंत्री राजेश सिकारिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया। समारोह में पुष्कर लाल अग्रवाल की पौत्री और विनोद कुमार अग्रवाल की पुत्री सोनल अग्रवाल को शिक्षा मंत्री ने प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। समारोह में मारवाड़ी समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे।◆

दिल्ली में :

महाराजा अग्रसेन भवन का उद्घाटन समारोह संपन्न

दिल्ली। श्री अग्रवाल सभा पीतमपुरा दिल्ली (पंजी.) द्वारा नव–निर्मित महाराजा अग्रसेन भवन का उद्घाटन समारोह भारी अग्रबंधुओं की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

भवन का उद्घाटन अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री गोटेवाले के कर–कमलों द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री के.सी. मित्तल ने अपने संबोधन में कहा कि गोटेवाले परिवार समाज की सेवा में जो योगदान दे रहे हैं वह आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा है। श्री मित्तल ने कहा यूं तो अपने लिए दुनिया सर्व सुविधा एकत्र करती है लेकिन यदि कोई जनहित के लिए कार्य करे वह अविस्मरणीय होता है। श्री अग्रवाल सभा, पीतमपुरा के अध्यक्ष श्री जयकिशन दास गोयल ने अपनी पूरी कार्यकारिणी सदस्यों के साथ मिलकर जो वातानुकुलित महाराजा अग्रसेन भवन का नव–निर्माण किया है, इसके लिए सभी बधाई के पात्र है।

क्षेत्रीय विधायक श्री जयभगवान अग्रवाल ने कहा कि अग्रवाल समाज शुरू से ही देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में विशेष योगदान देता रहा है। क्षेत्रीय विधायक श्री श्यामलाल गर्ग ने कहा कि समाज किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता वह अपनी प्रतिभा व कार्यकुशलता से हासिल करने में निपुण है। चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो, चाहे प्रशासनिक हो या सामाजिक। इस समाज का हर क्षेत्र में वर्चस्व है। स्थानीय निगमपार्षद श्रीमती ऊषा गुप्ता ने कहा कि आज का युवा वर्ग साधन संपन्न, कर्तव्यनिष्ठ और विवेकशील है उसे अपनी बौद्धिक क्षमता का समाजसेवा में पूरा उपयोग करना चाहिए।

इस अवसर पर श्री रविन्द्र अग्रवाल, श्री रोशनलाल, श्री जयकिशन गुप्ता, श्री जयकिशन गोयल, श्री वृषभान गोयल, श्री कृष्णवासिया, श्री राधेश्याम गोयल, श्री हर्षवर्धन बंसल, श्री राजेश सिंघल, श्री नारायणदास गोयल, श्री लक्ष्मीचंद जी, श्री विनोद मित्तल, श्री हुक्मचंद मित्तल और श्री नरेश मित्तल सहित भारी संख्या में गणमान्य समाज बंधु उपस्थित थे।◆

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पार्षदों का अभिनन्दन

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से समाज के नवनिर्वाचित पार्षदों श्रीमती मीनादेवी पुरोहित, श्रीमती सुनीता झंवर, सुश्री श्वेता इन्दोरिया एवं विजय ओझा का अभिनन्दन किया गया। सचिव रामगोपाल बागला ने स्वागत भाषण में कहा कि समाज में एकता की ज़रूरत है। सम्मेलन में गरीब छात्र–छात्राओं को स्कूल फीस, पाठ्य पुस्तक नि:शुल्क दे रहा है। इसके अलावा गरीब लड़कियों की शादियां कराने का निर्णय लिया गया है। समाज के गरीब बच्चों को नि:शुल्क प्रशिक्षण भी देने की व्यवस्था की गई है। अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने कहा कि सेवा कार्यों को बढ़ाने में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने पार्षदों को अपने–अपने कामों में खरे उतरने का आग्रह किया। पार्षदों ने उपस्थित लोगों को आश्वासन दिया कि वे अपने–अपने वार्डों में विकास कार्य बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। समारोह की अतिथि बनवारीलाल मित्तल, बाबूलाल बुबना, महावीर प्रसाद सांवरिया ने भी सामाजिक एकता बढ़ाने की बातें कहीं। घनश्याम प्रसाद सोभासरिया, संयोजक दामोदर प्रासद विदावतका, के के सिंघानिया, रामनिवास शर्मा, राधाकिशन सफड़, विश्वनाथ भुवालका, विष्णुप्रकाश बागला, विजय डोकानिया, शिवकुमार क्याल, सुधीर बागला सहित समाज के कई प्रमुख उपस्थित थे। इससे पूर्व श्रीमती सुनीता लोहिया व श्रीमती उमा बागड़ी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन पत्रकार संजय हरलालका ने किया।◆

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन

मुख्यमंत्री तरूण गोगोई

अपने शब्दों को वापस लें

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ.श्यामसुन्दर हरलालका ने माननीय मुख्यमंत्री तरुण गोगोई को अपनी सरकार के दूसरे कार्यकाल के चौथे वर्ष की सफलता का उत्सव मनाने के दौरान फैंसी बाजार के व्यापारियों के लिए कहे गए अपशब्द को बहुत ही आपत्तिजनक और दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया है। उन्होंने आगे कहा कि मुख्यमंत्री ने यद्यपि व्यापारी शब्द का प्रयोग किया है लेकिन उनका निशाना मारवाड़ी समुदाय के प्रति ही है। व्यापारियों को कालाबाजारी कहना या आसू और असम गण परिषद का पिठ्ठू कहना बड़ा ही दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने आगे कहा कि मारवाड़ी समुदाय ने आसू आंदोलन में अगर बूट आदि वितरण किया है तो क्या अनैतिक कार्य किया। उन्होंने मारवाड़ी समुदाय का तिरष्कार करने की दृष्टिकोण से यह भी कहा कि उन कालाबाजारियों का वोट उन्हें नहीं चाहिए। वे समुदाय का नाम न लेते हुए भी अपने भाषण में बहुत कुछ अशोभनीय बात कहें जिसकी उनसे कभी भी आशा नहीं थीं। मुख्यमंत्री के इस कथन से समस्त मारवाड़ी समुदाय की छवि धूमिल हुई है। मुख्यमंत्री शायद यही कहना चाहते हैं कि फैंसी बाजार के व्यापारी कालाबाजारी हैं और बाकी प्रान्त के व्यापारी अच्छे हैं। श्री हरलालका ने आगे कहा कि फैंसी बाजार में अधिकतर मारवाड़ी समुदाय के लोग ही व्यापारी हैं। हालांकि फैंसी बाजार गुवाहाटी का ही नहीं बल्कि पूरे पूर्वोत्तर का प्राण केंन्द्र माना जाता है इसके बावजूद माननीय मुख्यमंत्री द्वारा व्यापारियों को आड़े हाथों लेना तथा उनके खिलाफ कालाबाजारी जैसे अपशब्द का प्रयोग करना संदेह के घेरे में लाकर खड़ा कर देता है। उनके इस कथन से मारवाड़ी समुदाय का बहुत अपमान हुआ है जिसका पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन घोर विरोध करता है एवं उनसे अपने शब्दों को वापस लेने की मांग करता है।◆

श्रद्धांजलि :

भजन सम्राट राजेंद्र जैन नहीं रहे

कोलकाता, 2 जून। पिछले पचास वर्षो से मंच साधना में आकण्ठ डूबे रहने वाले सुपरिचित गायक, अभिनेता, लेखक श्री राजेंद्र जैन का 2 जून को तड़के लगभग 4 बजे मुंबई में देहान्त हो गया। पिछले सप्ताह राजेंद्र जी का मुंबई में एक ऑपरेशन हुआ था। ऑपरेशन के उपरान्त वे थोड़ा स्वस्थ भी महसूस करने लगे थे। आधी रात के बाद अचानक उन्हें सीने में तकलीफ महसूस हुयी। तुंरत अस्पताल ले जाया गया। चिकित्सकों ने प्राथमिक देखभाल के उपरान्त उन्हें आई.सी.यू. में दाखिल कराने की हिदायत की। वहीं कुछ ही पलों में वे बेहोश हो गए, उसके बाद उन्हें होश नहीं आया। पारिवारिक सूत्रों ने बताया कि देश के लाखों लोगों को अपनी मृदु मुस्कान व कोकिलकंठी आवाज से आकर्षित करने वाले राजेंद्र जैन प्रातः लगभग 4 बजे सदा-सदा के लिए इस संसार को अलविदा कह गए। देर शाम उनका पार्थिव शरीर कोलकात स्थित लेकटाऊन (बृजधाम हाउसिंग कम्पलेक्स, वीआईपी रोड) स्थित उनके निवास पर ले जाया गया।

राजेंद्र जी के निधन का समाचार कोलकाता महानगर में जैसे ही फैला, सर्वत्र शोक की लहर छा गयी। महानगर की असंख्य संस्थाओं के कार्यक्रमों में अपनी आवाज का जादू बिखेरने वाले राजेंद्र जी पिछले 11 मई के लेकटाउन के बाल हनुमान मंदिर के विशेष समारोह में भजन पेश करने आए थे। मुंबई में बस जाने के बावजूद कोलकाता को वे अपना निजी घर मानते थे। राजेंद्र जैन ने प्रारंभिक दिनों में सासु लड़ मत-लड़ मत न्यारी करदे, जनम से कंवारो रै गयो, धरती धोरा री जैसे गीतों के माध्यम से लोकप्रियता के शिखर को छुआ था। रामानंद सागर के मशहूर धारावाहिक रामायण में उन्होंने न सिर्फ अपनी आवाज दी थी, वरन अभिनय भी किया था। वे स्वयं अपनी कम्पनी के माध्यम से नानी बाई को मारयो, कब आओगे राम, बाबा गंगाराम, राणीसती दादी जैसे कई मृत्य नाटकों का मंचन करते थे। पिछले दिनों कलामंदिर में उन्होंने बाबा गंगाराम पर बड़ा जोरदार नाटक अभिनीत किया था। राजेंद्र जी ने हजारों गीतों की रचना की और अपनी आवाज में गायक देश-विदेश में लोकप्रिय बनाया। राजेद्र जैन विदेशों में बसे भारतवांसियों में भी खासे लोकप्रिय थे। कोलकाता से उठकर गायकी के क्षेत्र में नाम कमाने वाले कलाकारों में वे सबसे ऊपर थे। श्री जैन अपने परिवार में पत्नी और एक बेटा अभिनय और असंख्य चाहने वाले छोड़ गए हैं। उनके अत्यन्त करीबी तबला वादक राजेश खन्ना, राणा आदि अनेकानेक कलाकार शोक में डूबे हुए हैं। राजेंद्र जैन ने अपनी कला से न सिर्फ खुद नाम कमाया, बल्कि कई कलाकारों को प्रतिभा निखारने का भी अवसर प्रदान किया। असंख्य कालाकार उनकी प्रेरणा से आज अपने क्षेत्र में अच्छे मुकाम पर पहुंचे हुए हैं। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से आपको श्रद्धासुमन अर्पित।◆

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, June 2010
RNI Regd. No. 2868/68

S R RUNGTA GROUP

Insync with Nature...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Sponge Iron Manufacturer

(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *– BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *– BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *– LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA – 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 – 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

REGD. OFFICE:
8A, EXPRESS TOWER
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA – 700 017, INDIA
Phone : 033 - 2281 6580, 22813751
Fax : 91-33- 2281 5380
E-mail : rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION:
MAIN ROAD,
BARBIL – 758 035
DIST. KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 275221
Telefax : 91- 6767- 276161

SPONGE IRON DIVISION:
MAIN ROAD,
BARBIL – 758 035
DIST. KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

T/WB/LM-887
SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL